शुद्धिपत्र

पृष्ठाङ्क	संदर्भ	अशुद्ध	शुद्ध
३	पं–६ शीर्ष से (टीकाकार का पुरोवाक)	प्रमाणिकता और विश्वसनियता	प्रामाणिकता और विश्वसनीयता
३	पं–१० शीर्ष से	मेरी अग्रजा श्रीराघव सरकार और आप सबकी 'बुआजी' डा० कुमारी गीतादेवी मिश्रा	मेरी अग्रजा– श्रीराघव सरकार और आप सबकी 'बुआजी' डा० कुमारी गीतादेवी मिश्रा–
३	पं–२६ शीर्ष से (वही)	प्रज्ञापराध भाषीत होने	प्रज्ञापराध भाषित होने
३	पं–२६ शीर्ष से (वही)	मारजारीय चंगुल में	मार्जारीय चंगुल में
४	पं–५ शीर्ष से (वही)	प्रगतिशिलों द्वारा	प्रगतिशीलों द्वारा
४	पं–२३ शीर्ष से (वही)	प्रयास मात्र है इसमें मैं	प्रयास मात्र है। इसमें मैं
४	पं–२४ शीर्ष से (वही)	निरुपधिकनिष्ठा	निरुपाधिकनिष्ठा
४	पं–२६ शीर्ष से (वही)	नहीं लिखा है यह प्रयास	नहीं लिखा है। यह प्रयास
५	पं–५ शीर्ष से (वही)	का प्रयोग किया है शब्दों	का प्रयोग किया है। शब्दों
५	पं–५ शीर्ष से (वही)	'अर्थात' शब्द का	'अर्थात्' शब्द का
५	पं–११ शीर्ष से (वही)	पात्र में नहीं वह एक ऐसे	पात्र में नहीं। वह एक ऐसे
५	पं–१२ शीर्ष से (वही)	भी ईर्ष्या करता है अब तक	भी ईर्ष्या करता है। अब तक
५	पं–२४ शीर्ष से (वही)	मुझे यावत् जवीन महर्षि	मुझे यावत् जीवन महर्षि
५	पं–२६ शीर्ष से (वही)	अनमुक्तता और निश्चिंतता	उनमुक्तता और निश्चिंतता
७	पं–१० शीर्ष से (भूमिका)	अपने सनातननिश्वासभूत	अपने सनातननिःश्वासभूत
८	पं–२५ शीर्ष से (वही)	क्षेत्रिय तथा आंचलिक	क्षेत्रीय तथा आंचलिक
९	पं–१६ शीर्ष से (वही)	तो श्रीरामचतिमानस की	तो श्रीरामचरितमानस की
९	पं–१७ शीर्ष से (वही)	मानस २.२४०.८	मानस (२.२४०.८)
११	पं–१३ शीर्ष से (वही)	हम सन पुन्य पुंज	हम सम पुन्य पुंज
१३	पं–१ शीर्ष से (वही)	मर्यादा पुराषोत्तम् हैं,	मर्यादा पुरुषोत्तम हैं,
१३	पं–८ शीर्ष से (वही)	श्रीरामचरिमानस	श्रीरामचरितमानस
१४	पं–१९ शीर्ष से (वही)	'इदमित्थं' कहि जाइ न सोई,	'इदमित्थं कहि जाइ न सोई',
१५	पं–४ शीर्ष से (वही)	अस्वभाविक नहीं है,	अस्वाभाविक नहीं है,
१५	पं–२७ शीर्ष से (वही)	(मानस, ४.२७.८)	(मानस, ४.२६.८)
१६	पं–१ शीर्ष से (वही)	(मानस, ४.२७.९)	(मानस, ४.२६.९)
१६	पं–८ शीर्ष से (वही)	काअशिष्ट प्रयोग	का अशिष्ट प्रयोग
१६	पं–१ शीर्ष से (वही)	(मानस, १.३०५.६)	(मानस, १.३०६.६)
१७	पं–३ शीर्ष से (वही)	देखि कपिन्ह निशाचर अनी।	देखी कपिन निशाचर अनी।
१७	पं–५ शीर्ष से (वही)	(मानस, ६.९०.८–९)	(मानस, ६.८९.८–९)
१७	पं–१३ शीर्ष से (वही)	इन्हहिं देखि बिधि	इनहिं देखि बिधि
१७	पं–१३ शीर्ष से (वही)	पटतर जोग बनावइ	पटतर जोग बनावै
१८	पं–६ शीर्ष से (वही)	निज पौरुष अनुरूप जिमि	निज पौरुष अनुसार जिमि
१८	पं–८ शीर्ष से (वही)	तुमहि आदि खग मशक	तुमहिं आदि खग मशक
१८	पं–२० शीर्ष से (वही)	(मानस, ७.६२.४)	(मानस, ७.६३.४)

पृष्ठाङ्क	संदर्भ	अशुद्ध	शुद्ध
१८	पं-२३ शीर्ष से (वही)	के प्रति लिपिकर्त्ता से	के प्रतिलिपिकर्त्ता से
१८	पं-२५ शीर्ष से (वही)	(मानस, ७.६२.४)	(मानस, ७.६३.४)
१९	पं-२ शीर्ष से (वही)	कीन्हेसि कठिन पढ़ाइ कुपाठू।	कीन्हेसि कठिन पढ़ाय कुपाठू।
१९	पं-८ शीर्ष से (वही)	मानस, १.२६०.७	मानस, १.२५९.७
१९	पं-९ शीर्ष से (वही)	मानस, १.१७५.७	मानस, २.१७५.७
१९	पं-१२ शीर्ष से (वही)	प्रीति की रीति सुहाई।	प्रीति कै रीति सुहाई।
१९	पं-२५ शीर्ष से (वही)	नहीं रही। "रामानुज लघु रेख खिंचाई।" (मानस, ६.३६.२.)	नहीं रही- "रामानुज लघु रेख खिंचाई।" (मानस, ६.३६.२.)।
२६	पं-१६ शीर्ष से (जीवन जाह्नवी)	कङ्गोपनिषदि श्रीराघवाकृपाभाष्यम्	कठोपनिषदि श्रीराघवाकृपाभाष्यम्
२६	पं-२२ शीर्ष से (वही)	ऐतरेयोपनिषदि (भाष्यग्रन्थ)	ऐतरेयोपनिषदि श्रीराघवाकृपाभाष्यम् (भाष्यग्रन्थ)
२६	पं-२३ शीर्ष से (वही)	श्वेतश्वतरोपनिषदि	श्वेताश्वतरोपनिषदि
२६	पं-२८ शीर्ष से (वही)	अपाणनीयप्रयोगाणाम विमर्शः	अपाणिनीयप्रयोगाणाम् विमर्शः
२६	पं-२९ शीर्ष से (वही)	पाणिनीयाष्टाध्याय्याः	पाणिनीयाष्टाध्यायाः
२७	पं-१८ शीर्ष से (वही)	के साक्षातस्वरूप,	के साक्षात्स्वरूप,
२९	पं-१० शीर्ष से तुलसीदासजी का जीवनवृत्त	में अनाधिकारी कहकर	में अनधिकारी कहकर
२९	पं-१८ शीर्ष से (वही)	श्रवणशुक्ल सप्तमी	श्रावणशुक्ल सप्तमी
३७	पं-२५ शीर्ष से (आरती)	जिवन धर "गिरिधर"	जिवनधन "गिरिधर"
३९	पं-९ शीर्ष से (श्री हनुमान चालीसा)	ज्ञान गुर सागर	ज्ञान गुन सागर
३९	पं-१५ शीर्ष से (वही)	विद्यावान गुनी अति चातुर।	विद्यावान गुनी अति चातुर।
३९	पं-१६ शीर्ष से (वही)	लखन-सीता मन बसिया।।	लखन सीता मन बसिया।।
३९	पं-२२ शीर्ष से (वही)	ब्रह्मादि मुनिशा।	ब्रह्मादि मुनीशा।
४०	पं-१७ शीर्ष से (वही)	जय हनुमान गोसाई।	जय हनुमान गोसाईं।
४०	पं-१७ शीर्ष से (वही)	गुरु देव की नाई।।	गुरु देव की नाईं।।
४०	पं-१८ शीर्ष से (वही)	शत बात पाठ कर जोई।	शत बार पाठ कर जोई।
		प्रसंगानुक्रमणिका	
४३	२	दोहा/चौपाई १२४/१-१३८	दोहा/चौपाई १२५/१-१३८
४३	२	पृष्ठ संख्या ११३	पृष्ठ संख्या ११२
४३	३	पृष्ठ संख्या १२४	पृष्ठ संख्या १२३
४३	४	पृष्ठ संख्या १२५	पृष्ठ संख्या १२४
४३	५	पृष्ठ संख्या १६५	पृष्ठ संख्या १६४
४३	६	पृष्ठ संख्या १७३	पृष्ठ संख्या १६४
४३	८	पृष्ठ संख्या १८२	पृष्ठ संख्या १८१
४३	१०	पृष्ठ संख्या ३१५	पृष्ठ संख्या ३१४
४३	११	पृष्ठ संख्या ३४२	पृष्ठ संख्या ३४१
४३	१२	पृष्ठ संख्या ३६२	पृष्ठ संख्या ३६१

पृष्ठाङ्क	क्रम० सं०	अशुद्ध	शुद्ध
४३	१४	पृष्ठ संख्या ३७५	पृष्ठ संख्या ३६४
४३	१५	पृष्ठ संख्या ३८६	पृष्ठ संख्या ३८५
४३	१९	पृष्ठ संख्या ४२२	पृष्ठ संख्या ४२१
४३	२०	पृष्ठ संख्या ४२८	पृष्ठ संख्या ४२७
४३	२१	दोहा/चौपाई १४९/४-१६१	दोहा/चौपाई १५९/४-१६१
४३	२१	पृष्ठ संख्या ४३०	पृष्ठ संख्या ४२९
४३	२२	पृष्ठ संख्या ४३८	पृष्ठ संख्या ४३७
४३	२३	पृष्ठ संख्या ४३८	पृष्ठ संख्या ४३७
४३	२४	पृष्ठ संख्या ५०७	पृष्ठ संख्या ५०६
४३	२५	पृष्ठ संख्या ५५८	पृष्ठ संख्या ५५७
४३	२६	पृष्ठ संख्या ५६३	पृष्ठ संख्या ५६२
४३	२७	पृष्ठ संख्या ५६७	पृष्ठ संख्या ५७०
४३	२८	पृष्ठ संख्या ५७१	पृष्ठ संख्या ५७६
४३	२९	पृष्ठ संख्या ५७७	पृष्ठ संख्या ५७६
४४	३०	पृष्ठ संख्या ५७८	पृष्ठ संख्या ५७७
४४	३१	पृष्ठ संख्या ५७९	पृष्ठ संख्या ५७८
४४	३२	दोहा/चौपाई १२/१-१३/२४	दोहा/चौपाई १२/१-१३/१४
४४	३२	पृष्ठ संख्या ५८४	पृष्ठ संख्या ५८३
४४	३६	पृष्ठ संख्या ५८७	पृष्ठ संख्या ५८८
४४	३७	पृष्ठ संख्या ५९१	पृष्ठ संख्या ५९०
४४	४०	पृष्ठ संख्या ६०१	पृष्ठ संख्या ६००
४४	४१	दोहा/चौपाई २७/१-३२ख	दोहा/चौपाई २७/१-३१ख
४४	४१	पृष्ठ संख्या ६०४	पृष्ठ संख्या ६०२
४४	४२	पृष्ठ संख्या ६११	पृष्ठ संख्या ६१०
४४	४३	पृष्ठ संख्या ६१३	पृष्ठ संख्या ६११
४४	४४	पृष्ठ संख्या ६१५	पृष्ठ संख्या ६१४
४४	४५	पृष्ठ संख्या ६१९	पृष्ठ संख्या ६१८
४४	४६	दोहा/चौपाई ४३/५-४८/६२३	पृष्ठ संख्या ४३/५-४८
४४	४७	पृष्ठ संख्या ६२८	पृष्ठ संख्या ६३३
४४	४८	पृष्ठ संख्या ६३४	पृष्ठ संख्या ६३३
४४	४९	पृष्ठ संख्या ६३७	पृष्ठ संख्या ६३६
४४	५०	पृष्ठ संख्या ६४३	पृष्ठ संख्या ६४२
४४	५१	पृष्ठ संख्या ६४४	पृष्ठ संख्या ६४३
४४	५२	पृष्ठ संख्या ६४८	पृष्ठ संख्या ६४७
४४	५३	पृष्ठ संख्या ६४९	पृष्ठ संख्या ६४८
४४	५५	पृष्ठ संख्या ६५३	पृष्ठ संख्या ६५१
४४	५६	पृष्ठ संख्या ६५३	पृष्ठ संख्या ६५२
४४	५७	पृष्ठ संख्या ६५६	पृष्ठ संख्या ६५४
४४	५८	पृष्ठ संख्या ६५७	पृष्ठ संख्या ६५६

पृष्ठाङ्क	क्रम० सं०	अशुद्ध	शुद्ध
४४	५९	पृष्ठ संख्या ६६०	पृष्ठ संख्या ६५९
४४	६०	पृष्ठ संख्या ६६५	पृष्ठ संख्या ६६४
४४	६१	पृष्ठ संख्या ६७४	पृष्ठ संख्या ६७२
४५	६४	दोहा/चौपाई २५/४-२६/८	पृष्ठ संख्या २४/५-२६/८
४५	६४	पृष्ठ संख्या ६८४	पृष्ठ संख्या ६८३
४५	६६	पृष्ठ संख्या ६८८	पृष्ठ संख्या ६८७
४५	६७	पृष्ठ संख्या ६९२	पृष्ठ संख्या ६९१
४५	६८	पृष्ठ संख्या ६९६	पृष्ठ संख्या ६९५
४५	६९	पृष्ठ संख्या ७०६	पृष्ठ संख्या ७०५
४५	७१	पृष्ठ संख्या ७३१	पृष्ठ संख्या ७३०
४५	७२	पृष्ठ संख्या ७५२	पृष्ठ संख्या ७५१
४५	७३	पृष्ठ संख्या ७७२	पृष्ठ संख्या ७७१
४५	७४	पृष्ठ संख्या ७८०	पृष्ठ संख्या ७७९
४५	७५	पृष्ठ संख्या ७८६	पृष्ठ संख्या ७८५
४५	७७	पृष्ठ संख्या ८०९	पृष्ठ संख्या ८०८
४५	७८	पृष्ठ संख्या ८१८	पृष्ठ संख्या ८१७
४५	७९	दोहा/चौपाई १०७/१-१०१ख	पृष्ठ संख्या १०७/१-१०९ख
४५	७९	पृष्ठ संख्या ८१९	पृष्ठ संख्या ८१८
४५	८०	पृष्ठ संख्या ८२३	पृष्ठ संख्या ८२१
४५	८१	पृष्ठ संख्या ८३१	पृष्ठ संख्या ८३०
४५	८२	पृष्ठ संख्या ८३६	पृष्ठ संख्या ८३७
४५	८३	पृष्ठ संख्या ८५०	पृष्ठ संख्या ८४९
४५	८४	पृष्ठ संख्या ८६४	पृष्ठ संख्या ८६३
		परिशिष्ट	
४५	१	८८८	८८७
		मासपारायण के विश्राम स्थान	
४६	दशम विश्राम	बालाकण्ड	बालकाण्ड
४	१.६.३	तन	तनु
४	१.६.६भा.-पं-२	अशु	असु
७	पं-२ शीर्ष से	की	का
११	१.७.१२ भा.-पं-५	धूआँ	धुआँ
१२	१.८.२ भा.-पं-१	उद्भिज्ज	उद्भिज
१५	१.१०.१०भा.-पं-१	धूआँ	धुआँ
१५	१.१०.१०भा.-पं-२	इसमे	इसमें
१६	१.११.४	सारद	शारद
१६	१.११.८	सारदा	शारदा
१७	१.१२	सारद	शारद
२०	१.१४(ङ)भा.-पं-१	यजुष	यजुष्
२०	१.१५.१	सारद	शारद

पृष्ठाङ्क	संदर्भ	अशुद्ध	शुद्ध
२२	पद्यानुवाद पं-३-६	क्लेशित न... ग्रस पायो है।	
२५	१.१९	बरषा रितु रघुपति भगति	बरषा ऋतु रघुपति भगति
३०	१.२५ विशेष पं-२	तीन सौ दस	तीन सौ तैंतीस
३१	१.२६.६ भा.-पं-३	श्रीहनुमान	श्रीहनुमान्
३२	१.२७.८ भा.-पं-४	श्रीहनुमान	श्रीहनुमान्
३५	पं-८ शीर्ष से	श्रीरामचरित्मानस	श्रीरामचरितमानस
३५	१.३१.३ भा.-पं-१,२	श्रीहनुमान	श्रीहनुमान्
३८	१.३४.४ भा.-पं-२	श्रीहनुमान	श्रीहनुमान्
४०	पं-१ शीर्ष से	श्रीरामचरितमानस्	श्रीरामचरितमानस
४०	पं-१,२ शीर्ष से	श्रवणेन्द्री	श्रवणेन्द्रीय
४२	१.३७.१० भा. -पं-४	श्रीरामचरितमानस रूप	श्रीरामचरितमानस रूपी
४२	१.३७.१२ भा. -पं-३	आस्थारूपिणि	आस्थारूपिणी
४६	१.४२.१	सरित छहू रितु रूरी	सरित छहू ऋतु रूरी
४९	१.४५.८ भा.-पं-१	हस्तगत्	हस्तगत
५१	१.४८.१	रिषि	ऋषि
५२	१.४९.२ भा. -पं-३	पश्चात ताप	पश्चात्ताप
६२	१.६४.३	तहँ असि मरजादा	तहँ अस मरजादा
६६	पं-११ शीर्ष से	निरपेक्ष्य,	निरपेक्ष,
६६	१.६८.४,७	देवरिषि	देवऋषि
६८	१.७०.७	प्रनतारित	प्रनतारति
७१	१.७५.४	रिषीशा	ऋषीशा
७४	१.७८.५	रिषिन	ऋषिन
७४	१.७८	रिषय	ऋषय
७६	१.८१.२ भा. -पं-१	मुनिश्वरों	मुनीश्वरों
७७	१.८२.२	सप्तरिषि	सप्तऋषि
७७	१.८३.४ भा. -पं-१	असमंजस्य	असामंजस्य
८०	१.८६	अचल हृदय समाधि शिव,	अचल समाधि शिव,
८३	१.९०.३ भा. -पं-३	अकार	अकाम
८९	१.९७	रिषि	ऋषि
९३	१.१०२.६ भा. -पं-२	लिय	लिये
९५	१.१०४.६ भा. -पं-२	भक्ति	भक्त
९८	१.१०८.६ भा. -पं-२	पूर्वअवतार	पूर्व अवतार
९८	१.१०८.६ भा. -पं-३	अलच्छगति	अलक्ष्यगति
९९	१.१०८ भा. -पं-१	दशरथराज-पुत्र	दशरथराजपुत्र
१०२	१.११३.७ भा. -पं-३	नमित्	नमित
१०४	१.११६.६	हरष बिषाद ग्यान अग्याना। जीव धर्म अहमिति अभिमाना।।	**सहज** प्रकाश रूप भगवाना । **नहिं** तहँ पुनि **बिग्यान बिहाना।।**

पृष्ठाङ्क	संदर्भ	अशुद्ध	शुद्ध
१०४	१.११५.७	राम ब्रह्म ब्यापक जग जाना। परमानंद परेश पुराना।।	हरष बिषाद ग्यान अग्याना । जीव धर्म अहमिति अभिमाना।।
१०७	१.११९.४ भा. –पं–२	लोग	लोग
११०	१.१२२ भा. –पं–३	भट्	भट
११०	१.१२२ भा. –पं–३	हनुमान	हनुमान्
११४	१.१२७.४ भा. –पं–१	कर्त्तवों	कर्त्तव्यों
११५	१.१२८.५	रिषिहिं	ऋषिहिं
१२२	पं –४ शीर्ष से	न ही	नहीं
१२२	पं –७ शीर्ष से	काकूवक्रोक्ति	काकुवक्रोक्ति
१२२	पं –१० शीर्ष से	देवतओं	देवताओं
१२३	१.१३९.६ भा. –पं–३	अर्थात	अर्थात्
१२५	१.१४१.८ भा. –पं–२	भ्गवान	भगवान्
१२५	१.१४२.४ भा. –पं–१	परमभगवद् भक्त	परमभगवद्भक्त
१२६	१.१४२ भा. –पं–४	हविषा कृष्ण वर्तमेव	हविषा कृष्ण वर्त्मेव
१२७	१.१४४.८ भा. –पं–१	सर्व, सर्वेश्वर	सर्वसर्वेश्वर
१३४	१.१५४.८ भा. –पं–१	लक्षद्वीप	प्लक्षद्वीप
१३४	१.१५४.८ भा. –पं–२	सातद्वीप	शाकद्वीप
१३४	१.१५४.८ भा. –पं–२	क्रंचद्वीप	क्रौञ्चद्वीप
१३४	१.१५४.८ भा. –पं–२	शालमणिद्वीप	शाल्मलीद्वीप
१४१	१.१६४.८ भा. –पं–१	हस्तगत्	हस्तगत
१५६	१.१८४.२ भा. –पं–२	साधु, श्रीवैष्णवों	साधु श्रीवैष्णवों
१५९	१.१८७.७ भा. –पं–२	चतुष्पद्	चतुष्पाद
१६१	१.१८९.५	रिषिहिं	ऋषिहिं
१७५	१.२०६.२ भा. –पं–३	गरुड़ जी भरद्वाज जी	गरुड़ जी, भरद्वाज जी
१७५	१.२०६.६ भा. –पं–३	कि, पृथ्वी	कि पृथ्वी
१७६	१.२०७.४ भा. –पं–२	सोडषोपचार	षोडषोपचार
१७६	१.२०७.६ भा. –पं–२	अपनी	अपना
१७७	१.२०८(क)	रिषिहिं सुत	ऋषिहिं सुत
१७९	१.२१०.२ भा. –पं–४	**षडहोंरात्रं**	**षडहोरात्रं**
१८१	१.२१२.४	रिषिन	ऋषिन
१८८	१.२२०.७	बिध	बिधि
१९४	पं–४ शीर्ष से	सीता जी की पुत्री	सीता जी के पुत्री
१९४	१.२२८.३ भा. –पं–३	स्वयंवरोचित्	स्वयंवरोचित
१९६	पं–१ शीर्ष से	दुधमति	दूधमति
१९६	पं–४ शीर्ष से	स्वयंपुराण पुरुषोत्तम	स्वयं पुराणपुरुषोत्तम
१९६	पं–५ शीर्ष से	धर्नुभंग	धनुर्भंग
२०९	१.२४५.२ भा. –पं–१	सीता स्वयंवर	सीता–स्वयंवर
२०९	१.२४५.६ विशेष पं –१	शब्द का उपमान है। सागर	शब्द का उपमान है सागर ।

पृष्ठाङ्क	संदर्भ	अशुद्ध	शुद्ध
२१९	१.२५८.४ भा. –पं–२	काठोर	कठोर
२१९	१.२५८.८ भा. –पं–१	जटता	जड़ता
२२२	१.२६१ भा. –पं–८,१३	पश्चात ताप	पश्चात्ताप
२२४	१.२६४.४ भा. –पं–१	परमउत्साह	परम उत्साह
२२९	पं–२ शीर्ष से	दौहित्र	पौत्र
२२९	१.२६९.८ भा. –पं–१	पश्चात ताप	पश्चात्ताप
२३२	१.२७३.८ भा. –पं–२	भगवन !	भगवन् !
२३५	१.२७८.८ भा. –पं–१–२	बोले, हे राघव ! मैं, तुम्हारा .. .. ..विचार करके इस लक्ष्मण को बचाता	बोले– हे राघव ! मैं, तुम्हारा .. .. विचार करके इस लक्ष्मण को, बचाता
२३६	१.२७९.८	तव	तब
२३९	१.२८३.८ भा. –पं–१	कहा, वेद, ... करके कहें,	कहा– वेद, ... करके कहें।
२४१	१.२८६.८ भा. –पं–२	आधीन	अधीन
२४८	१.२९६.६ भा. –पं–२	श्रीअयोध्या भगवान, श्रीराम की पुरी,	श्रीअयोध्या, भगवान श्रीराम की पुरी,
२४८	१.२९६ भा. –पं–२	दूर्बा	दूर्वा
२५२	१.३०१ भा. –पं–२	राजोचित्	राजोचित
२५४	पं–५ शीर्ष से	हनुमान	हनुमान्–
२६२	१.३१५.२ भा. –पं–२	हस्तगत्	हस्तगत
२६६	१.३१८.८ भा. –पं–१	आदि जो स्वभाव से चतुर देवपत्नियाँ थीं। वे सब माया	आदि, जो स्वभाव से चतुर देवपत्नियाँ थीं वे सब, माया
२६६	१.३१९.४ भा. –पं–२	अर्घ	अर्घ्य
२६७	पं–२ शीर्ष से	अर्घ	अर्घ्य
२६७	१.३२०.८ भा. –पं–२	अर्घ	अर्घ्य
२७२	१.३२४ छं. २ भा.पं–१–२	पतिलोक प्राप्त कर ली,	पतिलोक प्राप्त कर लिया,
२७२	१.३२४ छं. २ भा.पं–२	और दिव्यशरीर की प्राप्ति हो गईं,	और उन्हें दिव्यशरीर प्राप्त हो गईं,
२७२	१.३२४ छं. २ भा. –पं–५	हैं, (धो रहे हैं)।	हैं (धो रहे हैं)।
२७२	१.३२४ छं. ३ भा. –पं–१	श्रीराम की हथेली सीता जी के हथेली पर रखकर	श्रीराम की हथेली पर सीता जी की हथेली रखकर
२७३	पं–४–५ शीर्ष से	कारण स्वरूप	कारणस्वरूपा
२७७	१.३२६ छं. ४	४१	४
२८१	१.३३०	देवरिषि	देवऋषि
२८२	१.३३१.८ भा. –पं–१	गाते हुए हे सूर्यकुल के स्वामी ! आपकी जय हो ! जय हो ! जय हो ! इस प्रकार जयकारा लगाते हुए	गाते हुए, हे सूर्यकुल के स्वामी ! आपकी जय हो ! जय हो ! जय हो ! इस प्रकार जयकारा लगाते हुए,
२९१	१.३४३.१	बड़ाई	बड़ाई ।
२९३	१.३४६.६ भा. –पं–१	दूर्बा	दूर्वा
२९५	१.३४९ भा. –पं–१	अर्घ	अर्घ्य

पृष्ठाङ्क	संदर्भ	अशुद्ध	शुद्ध
२९५	१.३५०.४ भा. –पं-१	सागर रूप	सागररूपी
३०५	२.श्लो.१.१ भा. वि. पं-३	का अर्थ है सीताजी	का अर्थ है सीताजी।
३०५	२.श्लो.२	रघुनन्दस्य	रघुनन्दनस्य
३०६	२. दो०१ वि.पं-१,२,२,३,४	हनुमान	हनुमान्
३१३	२.१०.८ भा. –पं-२	विष्मय	विस्मय
३१८	२.१६ भा.	नारियों में अधमप्रकृति की श्रीराम–विरोधिनी मंथरा जिसे अस्थिर बुद्धि मिली है, छिपे हुए कपट अर्थ वाले प्रिय वचन सुनकर देवताओं की माया के वशीभूत रानी कैकेयी अपनी शत्रु मंथरा को अपना स्वाभाविक मित्र जानकर उस का विश्वास कर बैठीं।	छिपे हुए कपट अर्थ वाले प्रिय वचन सुनकर नारियों में अधमप्रकृति की श्रीराम–विरोधिनी, जिसे अस्थिर बुद्धि मिली है उस, मंथरा को देवताओं की माया के वशीभूत रानी कैकेयी अपना स्वाभाविक मित्र जानकर उसका विश्वास कर बैठीं।
३१८	२.१६ भा. विशेष –पं-२	विशेषज्ञ	विशेषण
३२१	२.२०.२ भा. पं–२	कुबजा	कुब्जा
३२१	२.२०.४	पढ़ाय	पढ़ाइ
३२१	२.२० भा. पं–१	बगली	बगुली
३२४	२.२४.४	शीज	शील
३२५	२.२५.२	रुक	रुख
३२५	२.२५.४ भा. पं–१	काकवक्रोक्ति	काकुवक्रोक्ति
३२७	२.२६	बिहँ सि	बिहँसि
३३०	२.३१.३ भा. पं–४	नुकिली	नुकीली
३३४	२.३६.८ भा. पं–३	पश्चात ताप	पश्चात्ताप
३३५	२.३७.८ भा. पं–६	अवध तहाँ जह राम निवासू	‘अवध तहाँ जहँ राम निवासू’
३४६	२.५१.८ भा. पं–२	ऋषिकेश	हृषिकेश
३४८	२.५३.८ भा. पं–१	वात्सल	वात्सल्य
३५६	२.६३ भा. पं–२	पश्चात ताप	पश्चात्ताप
३६०	२.६८.६ भा. पं–३	निर्दय	कठोर
३६६	२.७६.४ भा. पं–३	मधुमक्खीयाँ	मधुमक्खियाँ
३६७	२.७७ भा. पं–३	चर्–अचर्	चर–अचर
३७३	२.८६.४ भा. पं–२	देते हैं कि, श्रीराम	देते हैं कि श्रीराम
३७३	२.८७.३ भा. पं–२	देखकर, श्रीराम	देखकर श्रीराम
३७३	२.८७.३ भा. पं–२	प्रणाम किया, लक्ष्मण,	प्रणाम किया। लक्ष्मण,
३७४	२.८८.४	बैठाईं	बैठाई
३७९	२.९४ भा. पं–२	ऋषिकेश	ह्रषिकेश
३७९	२.९५.७ भा. पं–३	वह सहने योग्य नहीं जलन उत्पन्न कर देती है।	वह नहीं सहने योग्य जलन उत्पन्न कर देती है।
३८०	२.९७.२ भा. पं–१	आर्त	आर्त्त

पृष्ठाङ्क	संदर्भ	अशुद्ध	शुद्ध
३८५	२.१०३.१ भा. पं-२	पार्थवेश्वर	पार्थिवेश्वर
३८६	पं-२ शीर्ष से	विदेह नन्दिनी	विदेहनन्दिनी
३८९	२.१०८.४ वि.पं-२	३ तथ्य भरद्वार	तथ्य भरद्वाज
३८९	२.१०८.४ वि.पं-२,३	भरद्वार	भरद्वाज
३९१	२.११०.६ भा. पं-२	पश्चात ताप	पश्चात्ताप
३९८	२.१२०.५	बनावै	बनावइ
३९८	२.१२०.६	इरिषा	ईर्ष्या
३९९	२.१२१.५	एरखियहिं	ए रखियहिं
३९९	२.१२१.५ भा. पं-२	इन्हें (श्रीसीता, राम, लक्ष्मण) को	इन्हें (श्रीसीता, राम, लक्ष्मण को)
४०४	पं-२ शीर्ष से	निर्षण	निरसन
४०५	२.१२८.५ वि. पं-१	श्रीगरुड़ श्रीभरद्वाज	श्रीगरुड़, श्रीभरद्वाज
४०५	२.१२८ भा. पं-२	गुणगण रूप	गुणगणरूपी
४०५	२.१२८ भा. पं-१	चूगती	चुगती
४०६	२.१२९.५ भा. पं-२	करती रहती है।	करती रहती है ;
४०६	२.१२९.५ भा. पं-४	से पाते हैं।	से पाते हैं ;
४०६	२.१२९.५ भा. पं-४	धारण करते हैं।	धारण करते हैं;
४०६	२.१२९.५ भा. पं-५	नमन करते हैं।	नमन करते हैं;
४०६	२.१२९.५ भा. पं-६	पूजा करते हैं।	पूजा करते हैं;
४०६	२.१२९.५ भा. पं-७	विश्वास नहीं रहता।	विश्वास नहीं रहता;
४०६	२.१२९.५ भा. पं-८	चल कर जाते हैं।	चल कर जाते हैं;
४०६	२.१२९ भा. पं-१	जप करते हैं)।	जप करते हैं);
४०६	२.१२९ भा. पं-२	पंचायतन की पूजा)।	पंचायतन की पूजा);
४०६	२.१२९ भा. पं-३	बहुत दान देते हैं।	बहुत दान देते हैं;
४०६	२.१२९ भा. पं-४	सेवा करते हैं।	सेवा करते हैं;
४०६	२.१३०.२ भा. पं-१	मोह नहीं है।	मोह नहीं है;
४०६	२.१३०.२ भा. पं-२	विकार) नहीं है।	विकार) नहीं है;
४०६	२.१३०.२ भा. पं-२	द्वेष नहीं है।	द्वेष नहीं है;
४०७	२.१३०.५ भा. पं-१	हितैषी हैं।	हितैषी हैं;
४०७	२.१३०.५ भा. पं-२	समान है।	समान है;
४०७	२.१३०.५ भा. पं-१	कहते हैं।	कहते हैं;
४०७	२.१३०.५ भा. पं-१	शरणागत् हैं।	शरणागत हैं;
४०७	२.१३०.५ वि. पं-१	किष्किन्धकाण्ड	किष्किन्धाकाण्ड
४०७	२.१३०.५ वि. पं-१	हनुमान	हनुमान्
४०७	२.१३०.८ भा. पं-२	विष मानते हैं।	विष मानते हैं;
४०७	२.१३०.८ भा. पं-२	प्रसन्न होते हैं।	प्रसन्न होते हैं;
४०७	२.१३०.८ भा. पं-३	जाते हैं।	जाते हैं;
४०७	२.१३० वि. पं-१	हनुमान	हनुमान्
४०७	२.१३१.२ भा. पं-१	ग्रहण करते हैं।	ग्रहण करते हैं;

पृष्ठाङ्क	संदर्भ	अशुद्ध	शुद्ध
४०७	२.१३१.२ भा. पं–१–२	सहते हैं।	सहते हैं;
४०७	२.१३१.२ भा. पं–१	मर्यादा रही है।	मर्यादा रही है;
४०७	२.१३१.२ वि. पं–१	दशम्	दशम
४०७	२.१३१.२ वि. पं–१	सुसंगठित	सुसंघटित
४०८	२.१३१.६ वि. पं–२	सुसंगठित	संघटित
४०८	२.१३१.८ भा. पं–२	समझता है। अथवा	समझता है अथवा
४०८	२.१३१.८ भा. पं–२	देखता रहता है।	देखता रहता है;
४०८	२.१३१.८ भा. पं–३	सेवक है।	सेवक है;
४०८	२.१३१ भा. पं–१	नहीं चाहिये।	नहीं चाहिये;
४०८	२.१३१.८ भा. पं–३	व्यक्तिगत्	व्यक्तिगत
४०८	२.१३१ वि. पं–१	हनुमान	हनुमान्
४०९	२.१३२.२ भा. पं–१	इस प्रकार, से	इस प्रकार से
४०९	२.१३२.६ भा. पं–३	करने के लिए, डाकिनी	करने के लिए डाकिनी
४०९	२.१३२.६ भा. पं–४	मार डालती है।	मार डालती है
४१०	२.१३३.६	थपति पधाना।।	थपति प्रधाना।।
४११	२.१३४.६ वि. पं–१	अर्थों का बोधक है भगवान्	अर्थों का बोधक है। भगवान्
४११	२.१३४.६ वि. पं–२	*रघुन सम्पूर्ण*	*रघुन् सम्पूर्ण*
४११	२.१३४.६ वि. पं–२	रघुकुलो तमवांश्च	रघुकुलोद्भवांश्च
४११	२.१३४.८ भा. पं–२	सुमित्रा पुत्र	सुमित्रापुत्र
४१४	२.१३९.२ भा. पं–१	नेत्रवान्	नेत्रवान
४१४	२.१३९.२ भा. पं–१	अचर्	अचर
४१४	२.१३९.२ भा. पं–२–३	निवास अधिकारी	निवास के अधिकारी
४१६	२.१४२ भा. पं–२	निषाद गण	निषादगण
४१८	२.१४५.२ वि. पं–७	पश्चात ताप	पश्चात्ताप
४२०	२.१४७.२ भा. पं–१	पश्चात ताप	पश्चात्ताप
४२१	२.१४९.८ भा. पं–१	संदेशा	संदेश
४२२	२.१५० भा. पं–२	श्रीराम, लक्ष्मण	श्रीराम–लक्ष्मण
४२६	२.१५५.६ भा. पं–२	महराज	महाराज
४२८	२.१५८.२ भा. पं–३	कर रहे थे कि, उड़कर	कर रहे थे कि उड़कर
४२९	२.१५९.६ भा. पं–२	देखकर, कैकेयी पूछती हैं कि, हमारे	देखकर कैकेयी पूछती हैं कि हमारे
४२९	२.१५९.६ वि. पं–१	ज्ञात हुआ कि, वह	ज्ञात हुआ कि वह
४२९	२.१५९.६ भा. पं–१	माँगती है कि, हे	माँगती है कि हे
४२९	२.१५९.६ भा. पं–३	जबकि, इससे उसी की	जबकि इससे उसी की
४३४	२.१६५.६ भा. पं–२	यह जान लो कि, समय	यह जान लो कि समय
४३४	२.१६५.८ भा. पं–२	कौन जाने कि, उन्हें	कौन जाने कि उन्हें
४३५	२.१६७.८ भा. पं–३	हो इ	होइ
४५४	२.१९२.८ भा. पं–२	पश्चात ताप	पश्चात्ताप
४५६	२.१९४.६ भा. पं–२	जगत	जगत्

पृष्ठाङ्क	संदर्भ	अशुद्ध	शुद्ध
४५६	२.१९४.८ भा. पं-४	काव्यजगत	काव्यजगत्
४५८	२.१९७.४ भा. पं-१	जगतपावनी गंगा जी	जगत्पावनी गंगा जी
४६७	२.२०७.४ वि. पं-२	सत्यव्रत	सत्यव्रती
४६९	२.२१०.२ भा. पं-३	दारिद्र	दारिद्र्य (दरिद्रता)
४७१	२.२१२.८ भा. पं-३	कहा, वत्स! भरत	कहा - वत्स भरत !
४७२	२.२१४.२ भा. पं-१	शिराधार्य	शिरोधार्य
४७३	२.२१४ भा. पं-१	राजोचित्	राजोचित
४७९	२.२२२.४ वि. पं-२	स्वरूपगत्	स्वरूपगत
४८३	२.२२६.८ भा. पं-५	मत्यगजेन्द्रनाथ	मत्तगजेन्द्रनाथ
४८३	२.२२७.२ भा. पं-१	श्रीरामशोक वश	श्रीराम शोकवश
४८४	२.२२७.८ भा. पं-१	ऋषिकेश	हृषिकेश
४८९	२.२३२.१	मग न	मगन
४८९	२.२३२.७ भा. पं-१४	शंपति	संपति
४९२	२.२३५.४ भा. पं-२-३	हो जाती है। उसी .. श्रीभरत की गति हुई, अर्थात्	हो जाती है उसी .. .. की गति हुई; अर्थात्
४९५	२.२३९.५ भा. पं-१	श्रीभरत ने देखा की	श्रीभरत ने देखा कि
४९९	२.२४४.४ भा. पं-१	खानि, चतुर ऐश्वर्य आदि	खानि, चतुर, ऐश्वर्य आदि
५००	२.२४६.४	सुकुमाारी	सुकुमारी
५०१	२.२४६ भा. पं-२	में	से
५०२	२.२४८.३ भा. पं-४	आवाहन्	आवाहन
५०४	२.२५०.४ भा. पं-२	दोनियों	दोनों
५०४	२.२५०.४ भा. पं-३	कि, श्रीराम की कृपा से आज कोल, किरातों का स्नेह, अवधवासियों के स्नेह से अधिक हो गया।	कि श्रीराम की कृपा से आज कोल- किरातों का स्नेह, अवधवासियों के स्नेह से अधिक हो गया।
५०६	२.२५२.७ भा. पं-१	पश्चात ताप	पश्चात्ताप
५०७	२.२५३.८ भा. पं-२	(सन्ध्यवंदनादि)	(सन्ध्यावंदनादि)
५०७	२.२५४.८ भा. पं-३	निकलेगा कि,	निकलेगा कि
५०८	पं-४ शीर्ष से	चौदह बरष राम	चौदह बरस राम
५०९	२.२५५	सनेह मय	सनेहमय
५०९	२.२५६.६ भा. पं-१	अभीष्ठ	अभीष्ट
५११	२.२५८.८ भा. पं-२	कि, मेरी बुद्धि	कि मेरी बुद्धि
५११	२.२५९.३ भा. पं-४	आश्रयरूप	आश्रयरूपी
५१६	२.२६५.४ भा. पं-१	अम्बरीश	अम्बरीष
५१६	२.२६५.४ वि. पं-१	अम्बरीश	अम्बरीष
५१६	२.२६६.२ भा. पं-२	देवताओं चिन्ता छोड़	देवताओं ! चिन्ता छोड़
५१७	२.२६६.४ भा. पं-१	देखो उनके सहज	देखो। उनके सहज
५१७	२.२६६.४ भा. पं-२	डर नहीं है श्रीभरत को	डर नहीं है। श्रीभरत को
५१७	२.२६७.५ भा. पं-१	निराधर	निराधार

पृष्ठाङ्क	संदर्भ	अशुद्ध	शुद्ध
५१७	२.२६७.५ भा. पं-४	आप ने	आपने
५१८	२.२६८.४ भा. पं-२	इसमें है कि, वह	इसमें है कि वह
५१९	२.२६९.४	सहत	रहत
५१९	२.२६९ भा. पं-१	आप ने	आपने
५२४	२.२७६ छं. भा. पं-१	कहते हैं कि, विदेहराज	कहते हैं कि विदेहराज
५२५	२.२७७.२ भा. पं-३	ममतावान्	ममतावान
५२५	२.२७७.५ भा. पं-५	खेनेवाले के बिना, जैसे	खेनेवाले के बिना जैसे
५२५	२.२७७ भा. पं-१	नीमिकुल	निमिकुल
५२६	पं-३ शीर्ष से	किया था कि, संसार	किया था कि संसार
५२६	पं-१८ शीर्ष से	तब श्रीराम, लक्ष्मण जी	तब श्रीराम-लक्ष्मण जी
५२६	पं-२४ शीर्ष से	होता है कि, कौशिक जी	होता है कि कौशिक जी
५२६	पं-२४ शीर्ष से	मिथिला पक्ष के, इसलिए	मिथिला पक्ष के। इसलिए
५२६	२.२७८.६ भा. पं-१	कहा, हे नाथ!	कहा- हे नाथ!
५२६	२.२७८.६ भा. पं-२	कहा, हे रघुकुल	कहा- हे रघुकुल
५२७	२.२७८ भा. पं-१	गद्धियों में	गड्डियों में ?
५२७	२.२७८ भा. पं-२	पुष्प दल	पुष्पदल
५२८	२.२७९.८ भा. पं-७	पलक	पल
५३०	२.२८२.८ भा. पं-२	माँग रखा था कि, वे	माँग रखा था कि वे
५३३	२.२८५.२ भा. पं-३	जाता था, ऐसे	जाता था ऐसे,
५३३	२.२८६.२ भा. पं-१	उसे,	उससे,
५३५	२.२८८.२ भा. पं-१	सुगन्धरूप .. साररूप	सुगन्धरूपी .. साररूपी
५३८	२.२९१ भा. पं-२	अभीष्ठ	अभीष्ट
५३८	२.२९२.४ भा. पं-३	लगे कि, मैं यहाँ आया	लगे कि मैं यहाँ आया
५३९	२.२९२ भा. पं-२	ज्ञात है कि, वे	ज्ञात है कि वे
५४१	२.२९५.४ भा. पं-२	रहे हो कि, श्रीभरत की	रहे हो कि श्रीभरत की
५४२	२.२९६.२ भा. पं-१	करने लगे कि, सम्पूर्ण	करने लगे कि सम्पूर्ण
५४२	२.२९६.८ भा. पं-२	कहता हूँ कि, आप	कहता हूँ कि आप
५४३	२.२९७.८ भा. पं-२	राजन्ीति	राजनीति
५४५	२.३००.४ भा. पं-२	अनुकूल जाना बहुत	अनुकूल जाना । बहुत
५४६	२.३०१ छं. भा. पं-३	कहते हैं कि, यह	कहते हैं कि यह
५४७	२.३०२.६ भा. पं-४	जल हो अर्थात्	जल हो। अर्थात्
५४७	२.३०२.६ भा. पं-४	की हो जाती है। उसी	की हो जाती है, उसी
५४७	२.३०२.६ भा. पं-५	द्विविधा में पड़ गई, कभी	द्विविधा में पड़ गई। कभी
५५५	२.३१२.४	रिषिराऊ	ऋषिराऊ
५५५	२.३१३.४ भा. पं-२	सोचने लगी कि, श्रीराम	सोचने लगी कि श्रीराम
५५६	२.३१४.८ भा. पं-२	अभीष्ठ	अभीष्ट
५५७	२.३१५ भा. पं-१	कि, भगवान् श्रीराम जी ने कहा कि,	कि भगवान् श्रीराम जी ने कहा कि
५५८	पं-२ शीर्ष से	होता है कि, इनके	होता है कि इनके

पृष्ठाङ्क	संदर्भ	अशुद्ध	शुद्ध
५६३	२.३२३.८ भा. पं-१	दण्डवत	दण्डवत्
५६७	३. मंगलाचरण पं-५	काण्डउच्यते	काण्ड उच्यते ?
५६८	पं-४ शीर्ष से	१४ अतएव	१४। अतएव
५६८	३.श्लो २ भा. पं-३	रोकने के लिये) की,	रोकने के लिये) की,
५६८	३.श्लो १ भा. पं-४	सुशोभित है। जो	सुशोभित है जो
५६८	३.श्लो १ भा. पं-४	वरणीय हैं। जिनके	वरणीय हैं जिनके
५७१	पं-२ शीर्ष से	किया कि, अब	किया कि अब
५७२	३.४.६ भा. पं-१	वन्दित्	वन्दित
५७२	३.४.१०	श्वभक्तकल्पपादपम्	स्वभक्तकल्पपादपम्
५७३	३.५.१० भा. पं-२	वृद्ध रोगी,	वृद्ध, रोगी,
५७४	पं-२ शीर्ष से	रहती है कि, स्वप्न में भी	रहती है कि स्वप्न में भी
५७८	पं-६ शीर्ष से	मेरी प्रतिक्षा करें	मेरी प्रतीक्षा करें
५८१	३.११.१०	त्रासु	त्रातु
५८२	३.११.१६	गुणु	गुण
५८५	३.१३.१४ भा. पं-१	माँगता हूँ कि, आप	माँगता हूँ कि आप
५८७	३.१५ भा. पं-१	जो अपने को माया का ईश्वर नहीं समझता उसी को जीव कहते हैं	जो अपने को माया का ईश्वर नहीं अर्थात् स्वयं को भगवान् का दास समझता है उसी को जीव कहते हैं
५९१	३.१८.२	तस	तव
५९२	३.१८.१० भा. पं-१	आकाश मे उड़	आकाश में उड़
५९२	३.१८.१० भा. पं-२	राम, लक्ष्मण	राम - लक्ष्मण
५९३	३.१९.६ भा. पं-२	कहो कि, (गुफा	कहो कि (गुफा
५९४	३.१९(ख) भा. पं-२	(अस्त्र-शस्त्रों को) तिल	(अस्त्र-शस्त्रों) को तिल
५९५	३.२० छं ८	श्रृंगाल	श्रृगाल
५९५	३.२० छं ११	महँरिपु	महँ रिपु
५९१	३.२४.२ वि. पं-६,८	हनुमान	हनुमान्
५९९	३.२४.२ वि. पं -१७	**"अग्नि मिले पुरोहितं"**	**"अग्निमीले पुरोहितं"**
६०२	३.२६.६ वि. पं -१	उभयोर्यदि मर्त्तव्यम	उभयोर्यदि मर्त्तव्यम्
६०३	३.२७.६ वि. पं -१	विगतो देह यस्य सः विदेह प्रतिबिम्बः तस्य यम वैदेही	विगतो देहः यस्य सः विदेहः प्रतिबिम्बः तस्य इयम् वैदेही
६०७	पं-१ शीर्ष से	प्रतिक्षा	प्रतीक्षा
६०९	३.३१.२६ भा. पं-२	ऋषिमुख	ऋष्यमूक
६०९	३.३१.२६ भा. पं-२	हनुमान	हनुमान्
६१३	पं-३ शीर्ष से	**"भोगमात्र शाम्यलिंगात्"** व०सू ४.४.१८)	**"भोगमात्र साम्यलिंगात् .."** ब०सू ४.४.२१)
६२५	३.४६ भा. पं-६	भागवत्प्रपन्न	भगवत्प्रपन्न

पृष्ठाङ्क	संदर्भ	अशुद्ध	शुद्ध
६३०	**संपूर्ण पृष्ठ मुद्रित नहीं है जो निम्न हैं :-**		

और संसार के रोगों के लिए औषधिस्वरूप अत्यन्त मधुर पराशक्ति श्रीसीता तथा जनकनन्दिनी श्रीसीता की प्रतिबिम्बमयी माया की सीता जी के भी जीवन के आधारस्वरूप भगवान् श्रीराम के श्रीरामनामरूप अमृत का जो वैखरी वाणी द्वारा जप के माध्यम से सतत् पान करते रहते हैं, वे कृति अर्थात सत्कर्म करने वाले, पुण्यात्मा, भाग्यशाली महानुभाव धन्य हैं।

सो०- मुक्ति जनम महि जानि, ग्यान खानि अघ हानि कर।
जहँ बस शंभु भवानि, सो काशी सेइय कस न।।
जरत सकल सुर बृंद, बिषम गरल जेहिं पान किय।
तेहि न भजसि मति मंद, को कृपालु शङ्कर सरिस।।

भा०– जहाँ शिव जी तथा पार्वती जी निवास करते हैं ऐसे ज्ञान की खानि और पापों का नाश करने वाली उस काशी को मुक्ति की जन्मभूमि मानकर क्यों नहीं सेवा करनी चाहिये? अर्थात् काशीवास करके श्रीरामनाम का जप अवश्य करना चाहिये। हे मन्दमति जीव! जिन शिव जी ने क्षीरसागर से उत्पन्न कालकूट विष की गर्मी से सभी देवसमूहों को भस्म होते देखकर, उस भयंकर विष को श्रीरामनाम का उच्चारण करके पान कर लिया था, उनका भजन क्यों नहीं करता? अर्थात् शिव जी के ही भक्ति से श्रीरामभक्ति सम्भव है, क्योंकि शिव जी श्रीरामनाम जप के प्रथम आचार्य हैं और श्रीरामनाममंत्र के चतुर्थ अक्षर के ऋषि हैं, ऐसे उन (भगवान् शिव) के समान कृपालु कौन है?

आगे चले बहुरि रघुराया। ऋष्यमूक पर्बत नियराया।।

भा०– फिर रघुकुल के राजा भगवान् श्रीराम नारद जी के ब्रह्मलोक पधार जाने के पश्चात् लक्ष्मण जी के साथ पम्पा सरोवर से आगे चले और ऋष्यमूक पर्वत के निकट आ गये, अथवा प्रभु से मिलने के लिए ऋष्यमूक पर्वत ही उनके निकट आ गया।

तहँ रह सचिव सहित सुग्रीवा । आवत देखि अतुल बल सींवा।।
अति सभीत कह सुनु हनुमाना। पुरुष जुगल बल रूप निधाना।।
धरि बटु रूप देखु तैं जाई । कहेसुजानि जिय सयन बुझाई।।
पठए बालि होहिं मन मैला। भागौं तुरत तजौं यह शैला।।

भा०– उस ऋष्यमूक पर्वत पर श्रीहनुमान्, नल, नील और जाम्बवान इन चार मंत्रियों के साथ सुग्रीव जी रहते थे। जब उन्होंने अतुलनीय बल की सीमा स्वरूप श्रीराम एवं लक्ष्मण जी को अपने निकट आते देखा तब सुग्रीव जी ने अत्यन्त भयभीत होकर कहा, हे हनुमान्! सुनो, तुम ब्रह्मचारी ब्राह्मण का वेश धारण करके ऋष्यमूक पर्वत से नीचे जाकर, बल और रूप के निधान इन दोनों पौरुष सम्पन्न मनुष्य राजकुमारों को देखो। हृदय में समझकर मुझे संकेत से समझाकर कहना। यदि मन के मैले अर्थात् मलिन मनवाले बालि के द्वारा ये भेजे गये हों तब मैं तुरन्त भाग जाऊँ और यह पर्वत भी छोड़ दूँ।

बिप्र रूप धरि कपि तहँ गयऊ। माथ नाइ अस पूँछत भयऊ।।
को तुम श्यामल गौर शरीरा। छत्री रूप फिरहु बन बीरा।।
कठिन भूमि कोमल पद गामी। कवन हेतु बिचरहु बन स्वामी।।
मृदुल मनोहर सुंदर गाता। सहत दुसह बन आतप बाता।।
की तुम तीनि देव महँ कोऊ। नर नारायण की तुम दोऊ।।
दो०- जग कारन तारन भव, भंजन धरनी भार।
की तुम अखिल भुवन पति, लीन्ह मनुज अवतार।।१।।

भा०– कपि अर्थात् वृषाकपि स्वयं शिव जी जो हनुमान् जी के रूप में अवतीर्ण हुए थे, ब्राह्मण का रूप धारण करके वहाँ अर्थात् ऋष्यमूक पर्वत पर से उतरकर श्रीराम, लक्ष्मण जी के पास गये। सिर नवाकर

	इस प्रकार पूछने लगे, हे वीर! आप दोनों श्यामल, गौर शरीर वाले कौन हैं जो क्षत्रिय रूप में इस वन में भ्रमण कर रहे हैं? हे स्वामी! इस कठिन भूमि में कोमल चरणों से चलने वाले आप दोनों किस हेतु से अर्थात् किस कारण से वन में विचरण कर रहे हैं? कोमल मन को हरनेवाले सुन्दर श्रीअंगों से युक्त		
पृष्ठाङ्क	संदर्भ	अशुद्ध	शुद्ध
६३१	पं-५,५ शीर्ष से	हनुमान	हनुमान्
६३१	४.२.५ भा. पं-७	हनुमान	हनुमान्
६३१	४.२.७ भा. पं-१,१	हनुमान	हनुमान्
६३१	४.२.७ भा. पं-२	हनुमान	हनुमान्
६३१	४.२.१०	मैंनहिं	मैं नहिं
६३१	४.२.१० भा. पं-१,१	हनुमान	हनुमान्
६३२	४.३.८ भा. पं-१,३,४,५	हनुमान	हनुमान्
६३३	४.४. भा. पं-१,५	हनुमान	हनुमान्
६३३	४.४. वि. २ पं-१	हनुमान	हनुमान्
६३३	४.४. वि. ५ पं-१	चुँकि	चूँकि
६३३	४.४. वि. ५ पं-२	साक्षीकम	साक्षीकम्
६३३	४.४. ५ वि. (क) पं-१	हनुमान	हनुमान्
६३३	४.४. ५ वि. (ख) पं-२	हनुमान	हनुमान्
६३४	पं-४,७,८ शीर्ष से	हनुमान	हनुमान्
६३४	पं-९ शीर्ष से	व्याक्ति	व्यक्ति
६३४	पं-९,११,१२,१३,१४,१६ शीर्ष से	हनुमान	हनुमान्
६३४	४.५.८ भा. पं-२	जिस विधि जनकनन्दिनी	जिस विधि से जनकनन्दिनी
६३५	४.६.१५	उठी	उठे
६३६	४.७.१	होहि	होहिं
६३८	४.७ भा. पं-२	समान हैं फिर यदि	समान हैं। फिर यदि
६३८	४.८.६ भा. पं-२	वज्रवत	वज्रवत्
६४१	पं-५ शीर्ष से	४.९.१.	४.९.१ ।
६४१	पं-२३ शीर्ष से	प्रायश्चित्	प्रायश्चित्त
६४१	४.११.४ भा. पं-२	कहती हैं कि, हे पतिदेव	कहती हैं कि हे पतिदेव
६४२	४.११.९ भा. पं-२	वरदान माँग लिया।	का वरदान माँग लिया।
६४२	४.११.९ भा. पं-३	कठपुतली	(कठपुतली)
६४२	४.११.१२ भा. पं-३	हनुमान	हनुमान्
६४२	४.११ भा. पं-१	को तुरन्त बुलाया उन्होंने	को तुरन्त बुलाया। उन्होंने
६४३	४.१२.९	गत ग्रीषम बरषा रितु	गत ग्रीषम बरषा ऋतु
६४४	४.१४.४ भा. पं-१	विद्वान	विद्वान्
६४५	४.१५.५	ससि	शशि
६४५	४.१६.१	बिगत शरद रितु आई।	बिगत शरद ऋतु आई।
६४६	पं-१ शीर्ष से	शरदऋतु	शरद्ऋतु
६४६	४.१६.६ भा. पं-२	जनित्	जनित
६४७	४.१७.६ भा. पं-२	शरद की धूप	शरद् की धूप

पृष्ठाङ्क	संदर्भ	अशुद्ध	शुद्ध
६४७	४.१७.८ भा. पं-१	शरदपूर्णिमा की चन्द्रमा	शरद्पूर्णिमा की चन्द्रमा
६४७	४.१७ भा. पं-१	शरदऋतु	शरद्ऋतु
६४७	४.१८.१	निर्मल रितु आई।	निर्मल ऋतु आई।
६४८	पं-२ शीर्ष से	पत्नी पा ली, जिस बाण	पत्नी पा ली। जिस बाण
६४८	४.१९.२ भा. पं-१,२	हनुमान	हनुमान्
६४८	४.१९.४ भा. पं-२	हनुमान	हनुमान्
६४९	४.१९.६ भा. पं-१,२	हनुमान	हनुमान्
६४९	४.१९ भा. पं-१	आये उनका क्रोध देखकर	आये। उनका क्रोध देखकर
६४९	४.२०.५ भा. पं-३,४,५	हनुमान	हनुमान्
६५०	४.२२.२	होहि	होहिं
६५१	४.२२ भा. पं-२	हनुमान	हनुमान्
६५१	४.२३.३ भा. पं-१	हनुमान	हनुमान्
६५१	४.२३.५ वि. पं-२	*सेवये दर्कम*	*सेवयेदर्कम्*
६५२	४.२३.१३ भा. पं-१,२,३,६	हनुमान	हनुमान्
६५२	४.२४.६ भा. पं-२,२	हनुमान	हनुमान्
६५३	४.२४.८ भा. पं-१,२	हनुमान	हनुमान्
६५३	४.२५.१ भा. पं-१	वृतान्त	वृत्तान्त
६५३	४.२५.४ भा. पं-३	फल खाये फिर सभी	फल खाये। फिर सभी
६५३	४.२५.८ भा. पं-२	पश्चात ताप	पश्चात्ताप
६५४	४.२६.१० भा. पं-२	मग्न हो गये फिर	मग्न हो गये। फिर
६५५	४.२७.६ वि. पं-२	हनुमान	हनुमान्
६५५	४.२७ वि. पं-३	हनुमान	हनुमान्
६५७	४.२९ भा. पं-४	मैं वृद्ध हो गया हूँ मेरे	मैं वृद्ध हो गया हूँ। मेरे
६५७	४.३०.६ भा. पं-१,४	हनुमान	हनुमान्
६५७	४.३०.६ वि. पं-४	वानर मे हनुमान	वानर भे हनुमान
६५७	४.३०.८	लाघउँ जलधि अपारा।।	नाघउँ जलधि अपारा।।
६५८	पं-१,१ शीर्ष से	हनुमान	हनुमान्
६६०	पं-६,१०,११,१२,१४ शीर्ष से	हनुमान	हनुमान्
६६१	५.१.श्लो.३ भा. पं-५	हनुमान	हनुमान्
६६१	५.१.२	परिखहु	परिखेहु
६६१	५.१.३भा. पं-१ वि. पं-१	हनुमान	हनुमान्
६६१	५.१.३भा. पं-४	भागना नहीं कार्य होगा,	भागना नहीं। कार्य होगा,
६६२	५.१.५	तेहि	ता
६६२	५.१.६भा. पं-१,२,४	हनुमान	हनुमान्
६६२	५.१.८	एही	तेही
६६२	५.१.८ भा. पं-१,२,४	हनुमान	हनुमान्
६६२	५.१ भा. पं-१,२,३,४,५	हनुमान	हनुमान्
६६३	५.२.२ भा. पं-१,२,३	हनुमान	हनुमान्
६६३	५.२.६ भा. पं-१,३,४	हनुमान	हनुमान्

पृष्ठाङ्क	संदर्भ	अशुद्ध	शुद्ध
६६३	५.२.१२ भा. पं-१,३,४,५,६	हनुमान	हनुमान्
६६३	५.२ भा. पं-१,२,२	हनुमान	हनुमान्
६६४	५.३.५ भा. पं-४,४,६	हनुमान	हनुमान्
६६४	५.३.७ भा. पं-१,२	हनुमान	हनुमान्
६६४	५.३.११ भा. पं-१,२,३	हनुमान	हनुमान्
६६५	पं-१ शीर्ष से	समूह जिन्हें कौन गिन सकता है के सहित	समूह, जिन्हें कौन गिन सकता है, के सहित
६६५	५.३ भा. पं-१	हनुमान	हनुमान्
६६५	५.४.३ भा. पं-१	हनुमान	हनुमान्
६६६	पं-१ शीर्ष से	हनुमान	हनुमान्
६६६	पं-२ शीर्ष से	भयभीत हुई हनुमान	भयभीत हुई। हनुमान्
६६६	पं-६ शीर्ष से	हनुमान	हनुमान्
६६६	५.५.३ भा. पं-३,४	हनुमान	हनुमान्
६६६	५.५.८ भा. पं-१,२,३,४	हनुमान	हनुमान्
६६७	पं-१,३,४.६,८,९,१० शीर्ष से	हनुमान	हनुमान्
६६७	पं-७ शीर्ष से	सीता जी को ढूँढा अन्त में	सीता जी को ढूँढा।अन्त में
६६७	५.५ भा. पं-२,३ वि.पं-३	हनुमान	हनुमान्
६६७	५.६.३ भा. पं-१,३	हनुमान	हनुमान्
६६७	५.६.५ भा. पं-१,३	हनुमान	हनुमान्
६६८	५.६.८ भा. पं-१	हनुमान	हनुमान्
६६८	५.६ भा. पं-१,१,२	हनुमान	हनुमान्
६६८	५.७.५ भा. पं-१,४	हनुमान	हनुमान्
६६८	५.७.५ भा. पं-४	भरोसा हो गया है कि, प्रभु	भरोसा हो गया है कि प्रभु
६६८	५.७ भा. पं-१,५,५ वि. पं-१	हनुमान	हनुमान्
६६९	पं-१,६ शीर्ष से	हनुमान	हनुमान्
६६९	५.८.२ भा. पं-२	हनुमान	हनुमान्
६६९	५.८.५ भा. पं-१,२,३,३	हनुमान	हनुमान्
६६९	५.९.१ भा. पं-१,२,२,७,७	हनुमान	हनुमान्
६७०	५.९.९ भा. पं-५	हनुमान	हनुमान्
६७१	५.१०.४ भा. पं-३-४	सकती है, मेरी ऐसी प्रमाणिक प्रतिज्ञा है।	सकती है। मेरी ऐसी प्रामाणिक प्रतिज्ञा है।
६७१	५.१०.४ वि. पं-४	हनुमान	हनुमान्
६७१	५.१०.९ भा. पं-३	डराओ, कह दो यदि	डराओ। कह दो कि यदि
६७२	५.११.७ भा. पं-१	लंका जला दिया उसने	लंका जला दिया। उसने
६७२	५.११.७ भा. पं-३	प्राप्त कर लिया, नगर में	प्राप्त कर लिया। नगर में
६७२	५.११.७ भा. पं-५	आज ही दिन चारि अर्थात् दिन में चरण करने वाले	आज ही दिनचारि अर्थात् दिन में चरण करने वाले
६७२	५.११.७ वि. पं-१,२,४	हनुमान	हनुमान्
६७३	५.१२.११ वि. पं-५	हनुमान	हनुमान्

पृष्ठाङ्क	संदर्भ	अशुद्ध	शुद्ध
६७३	५.१२ भा. पं-१,२	हनुमान	हनुमान्
६७४	५.१३.४ भा. पं-८	हनुमान	हनुमान्
६७४	५.१३.७ भा. पं-१,२	हनुमान	हनुमान्
६७४	५.१३.१० भा. पं-१,२,६	हनुमान	हनुमान्
६७४	५.१३ भा. पं-१	हनुमान	हनुमान्
६७५	पं-१,२ शीर्ष से	हनुमान	हनुमान्
६७५	५.१४.२ भा. पं-१,३	हनुमान	हनुमान्
६७५	५.१४.४ भा. पं-२	हनुमान	हनुमान्
६७५	५.१४.८ भा. पं-२	हनुमान	हनुमान्
६७६	पं-१ शीर्ष से	हनुमान	हनुमान्
६७६	५.१५.४ भा. पं-१	हनुमान	हनुमान्
६७६	५.१५.१० भा. पं-१	हनुमान	हनुमान्
६७७	५.१६.९ भा. पं-३	परमसन्देह है कि, ऐसे निर्बल	परमसन्देह है कि ऐसे निर्बल
६७७	५.१६.९ भा. पं-४,४,५,६,७	हनुमान	हनुमान्
६७७	५.१७.४ भा. पं-१.२,४, ७	हनुमान	हनुमान्
६७७	५.१७.७ भा. पं-१.१	हनुमान	हनुमान्
६७८	५.१७.९ भा. पं-२	हनुमान	हनुमान्
६७८	५.१७ भा. पं-१	हनुमान	हनुमान्
६७८	५.१८.२ भा. पं-१	हनुमान	हनुमान्
६७८	५.१८.६ भा. पं-१,२,३	हनुमान	हनुमान्
६७८	५.१८.८ भा. पं-२,३,४	हनुमान	हनुमान्
६७९	पं-१ शीर्ष से	ज्यत्यतिबलो रामो .. सर्वरक्षसाम	जयत्यतिबलो रामो सर्वरक्षसाम्
६७९	पं-८ शीर्ष से	(वा०रा० ५.४३-३३,३४,३५,३६)	(वा०रा० ५.४२-३३,३४,३५,३६)
६७९	पं-११ शीर्ष से	हनुमान	हनुमान्
६७९	५.१८ भा. पं-१	हनुमान	हनुमान्
६७९	५.१९.६ भा. पं-३,४,५	हनुमान	हनुमान्
६८०	५.१९ भा. पं-१,२,४,४,५	हनुमान	हनुमान्
६८०	५.२०.४ भा. पं-१,१,२,२,५	हनुमान	हनुमान्
६८०	५.२०.८ भा. पं-१,२,४	हनुमान	हनुमान्
६८०	५.२० भा. पं-१	हनुमान	हनुमान्
६८१	५.२१ भा. पं-१	हनुमान	हनुमान्
६८१	५.२२.६ भा. पं-२,३	हनुमान	हनुमान्
६८२	५.२३.२	रिषि	ऋषि
६८२	५.२३.४ भा. पं-१	शोभित होती, मद, मोह	शोभित होती। मद, मोह
६८३	५.२४.८ भा. पं-१,४,५	हनुमान	हनुमान्
६८३	५.२४.८ भा. पं-७	कहा कि, नीति के	कहा कि नीति के
६८४	पं-१,३ शीर्ष से	हनुमान	हनुमान्
६८४	५.२५.७ भा. पं-१,२,३,३,५	हनुमान	हनुमान्

पृष्ठाङ्क	संदर्भ	अशुद्ध	शुद्ध
६८४	५.२५.९ भा. पं-१,१,२	हनुमान	हनुमान्
६८४	५.२५ भा. पं-१	हनुमान	हनुमान्
६८४	५.२६.४ भा. पं-१	हनुमान	हनुमान्
६८४	५.२६.६ भा. पं-२	हनुमान	हनुमान्
६८५	५.२६.८ भा. पं-१,२,३	हनुमान	हनुमान्
६८५	५.२६ भा. पं-१	हनुमान	हनुमान्
६८५	५.२७.२ भा. पं-१,३	हनुमान	हनुमान्
६८५	५.२७.८ भा. पं-१	हनुमान	हनुमान्
६८५	५.२७ भा. पं-१,२	हनुमान	हनुमान्
६८६	पं-१,१ शीर्ष से	हनुमान	हनुमान्
६८६	५.२८.४ भा. पं-१,१	हनुमान	हनुमान्
६८६	५.२८.६ भा. पं-१	हनुमान	हनुमान्
६८६	५.२८.८ भा. पं-२	हनुमान	हनुमान्
६८६	५.२९.६ भा. पं-१,२	हनुमान	हनुमान्
६८७	५.३०.३ भा. पं-४,६,८	हनुमान	हनुमान्
६८७	५.३०.६ भा. पं-२,३	हनुमान	हनुमान्
६८७	५.३०.८ भा. पं-१,२,२	हनुमान	हनुमान्
६८८	५.३० भा. पं-१	हनुमान	हनुमान्
६८८	५.३१.२ भा. पं-२	हनुमान	हनुमान्
६८८	५.३१.८ भा. पं-१	वह यह कि, आपसे	वह यह कि आपसे
६८८	५.३१.८ भा. पं-४	हैं कि, हे प्राणों!	हैं कि हे प्राणों!
६८८	५.३१.८ भा. पं-५	शोकरूप	शोकरूपी
६८९	५.३२.४	जातधान	जातुधान
६८९	५.३२.४ भा. पं-२,४	हनुमान	हनुमान्
६८९	५.३२.४ भा. पं-१०	रावण की कितनी बात अतः	रावण की कितनी बात। अतः
६८९	५.३२.८ भा. पं-१,७	हनुमान	हनुमान्
६९०	पं-१ शीर्ष से	हनुमान	हनुमान्
६९०	५.३३.३ भा. पं-१,२,३	हनुमान	हनुमान्
६९०	५.३३.५ भा. पं-१,२	हनुमान	हनुमान्
६९०	५.३३.९ भा. पं-१	हनुमान	हनुमान्
६९१	५.३४.२ भा. पं-१,२,३	हनुमान	हनुमान्
६९१	५.३४.४ भा. पं-१,३	हनुमान	हनुमान्
६९१	५.३४.४ भा. पं-२	नहीं होता। वही	नहीं होता वही
६९१	५.३४.४ भा. पं-३	कहते हैं कि, हे पार्वती!	कहते हैं कि हे पार्वती!
६९१	५.३४.६ भा. पं-२,३	हनुमान	हनुमान्
६९१	५.३४.६ भा. पं-४	आ जाता है विचारों में	आ जाता है, विचारों में
६९१	५.३४.१० भा. पं-३	कहा कि, हे मित्र!	कहा कि हे मित्र!
६९१	५.३४.१० भा. पं-३-४	चलने के साज सजाइये,	चलने के साज सजाइये।
६९१	५.३४ भा. पं-१	शीघ्र बुलाया, उनके आदेश	शीघ्र बुलाया। उनके आदेश

पृष्ठाङ्क	संदर्भ	अशुद्ध	शुद्ध
६९३	५.३६.३ भा. पं-१	हनुमान	हनुमान्
६९६	५.३९.३	तन	तनु
६९७	५.४०.४ भा. पं-१	ये दोनों दुष्ट विभीषण और माल्यवान शत्रु के	ये दोनों, दुष्ट विभीषण और माल्यवान, शत्रु के
६९७	५.४०.८ भा. पं-७	है कि, अब तुम्हे सब कुछ उल्टा दिख रहा है, जैसे	है कि अब तुम्हे सब कुछ उल्टा दिख रहा है। जैसे
६९९	५.४२.६	रिषिनारी	ऋषिनारी
७००	५.४३.९ भा. पं-२	हनुमान	हनुमान्
७०१	५.४४ भा. पं-२	हनुमान	हनुमान्
७०२	५.४७.४ भा. पं-४	प्रताप सूर्य	प्रतापसूर्य
७०५	पं-७,९ शीर्ष से	हनुमान	हनुमान्
७०७	५.५२.३ वि. पं-१,१	हनुमान	हनुमान्
७१०	५.५७.३	प्रकृत	प्रकृति
७१०	५.५७.८ भा. पं-२	हे राक्षसी ईश्वर!	हे राक्षसेश्वर!
७११	५.५८.४	क्रोधिहि	क्रोधिहिं
७१२	पं-२ शीर्ष से	केल	केलि
७१२	५.५८	कान	काम
७१३	५.६०.४ भा. पं-२	लहरें उद्धत नहीं होंगी।	लहरें उद्धत नहीं होंगी।
७१५	६.१. मं. भा. पं-२	हनुमान	हनुमान्
७१५	६.१.श्लो.१ भा. पं-१	कालरूप	कालरूपी
७१६	६.१.श्लो.२ भा. पं-५	दोष समूहों को	दोष-समूहों को
७१७	६.१.४ भा. पं-२	हनुमान	हनुमान्
७१७	६.१.४ भा. पं-४	खारा हो गया अर्थात्	खारा हो गया। अर्थात्
७१७	६.१.४ भा. पं-६	अतीत कालिक उक्ति	अतीतकालिक उक्ति
७१७	६.१.९ भा. पं-४-५	और कहा, सभी लोग मेरी एक प्रार्थना सुनिये,	और कहा- सभी लोग मेरी एक प्रार्थना सुनिये।
७१७	६.१ भा. पं-३	जय कहते हुए चल पड़े	जय कहते हुए चल पड़े।
७१९	६.३ भा. वि. पं-१	यह है कि, भले ही	यह है कि भले ही
७१९	६.३ भा. वि. पं-३	हनुमान	हनुमान्
७२१	६.६.६ भा. पं-३	खद्योत्	खद्योत
७२१	६.६.८ भा. पं-५	कार्त्यवीर्य	कार्तवीर्य
७२१	६.६.८ वि. पं-२	महान्तों वीराः येन् स	महान्तो वीराः येन स
७२१	६.६.८ वि. पं-२	हनुमान	हनुमान्
७२२	६.७.३	बेद कहहिं असि नीति	बेद कहहिं अस नीति
७२३	६.९.२ भा. पं-३	हनुमान	हनुमान्
७२४	६.९.१० भा. पं-१	हे तात!	हे तात्!
७२४	६.९ भा. पं-१	हे तात!	हे तात्!
७२५	६.१० भा. पं-१-२	श्रीरामरूप, रावण से अनेक गुना प्रबल	(श्रीरामरूप, रावण से अनेक गुना प्रबल)

पृष्ठाङ्क	संदर्भ	अशुद्ध	शुद्ध
७२५	६.११.४ वि. पं-३-४	यथावत	यथावत्
७२५	६.११.४ वि. पं-५	कनक मृग	कनकमृग
७२५	६.११.४ वि. पं-५	के व्यास से	के व्याज से
७२५	६.११.४ वि. पं-६	विछा	बिछा
७२५	६.११.४ वि. पं-९	मानस, ६.१२.४।।	मानस, ६.११.४।।
७२६	पं-२ शीर्ष से	हनुमान	हनुमान्
७२६	६.११ (क) भा. पं-१	करुणारूप और गुणों के	करुणा,रूप और गुणों के
७२७	६. १२ (क) भा. पं-१	हनुमान	हनुमान्
७२७	६.१२(क) वि. पं-३,५,६	हनुमान	हनुमान्
७२७	६.१२ (क) वि. पं-७	प्रत्युत	प्रत्युत्
७२७	६.१२ (ख) भा. पं-१	हनुमान	हनुमान्
७२९	६.१५ (ख) भा. पं-३	जीव जगत्	जीवजगत्
७२९	६.१६.३ भा. पं-२	कहते हैं कि, इनके हृदय में आठ दुर्गुण .. रहते हैं,	कहते हैं कि इनके हृदय में आठ दुर्गुण .. रहते हैं।
७३०	पं-५ शीर्ष से	श्री कौसल्या जी श्री सुमित्रा जी श्री अरुन्धती	श्री कौसल्या जी, श्री सुमित्रा जी, श्री अरुन्धती
७३०	पं-६ शीर्ष से	साहस असत्य भाषण,	साहस, असत्यभाषण,
७३०	पं-६ शीर्ष से	आभाव,	अभाव,
७३०	६.१६.६ भा. पं-२	आ गया कि, जब राम	आ गया कि जब राम
७३०	६.१६.८ भा. पं-२	कर लिया कि, मेरे पति	कर लिया कि मेरे पति
७३१	६.१७.६ भा. पं-३	हे तात!	हे तात्!
७३२	पं-१ शीर्ष से	से,जो खेल रहा था	से जो खेल रहा था
७३३	६.२० भा. पं-७	शुभ कथन सुनो, प्रभु	शुभ कथन सुनो- प्रभु
७३३	६.२० भा. पं-१०	बोलो कि, हे प्रणतपाल	बोलो कि हे प्रणतपाल
७३४	६.२१.४ भा. पं-१	भेंट हो चुकी थी, अंगद	भेंट हो चुकी थी। अंगद
७३५	६.२२.८ भा. पं-२	हनुमान	हनुमान्
७३५	६.२२.८ भा. पं-७	शूर्पणखा की विरुपीकरण	शूर्पणखा के विरुपीकरण
७३५	६.२२.८ भा. पं-१०	यदि अनुलोम्य हो	यदि आनुलोम्य हो
७३५	६.२२.८ भा. पं-११	यदि प्रतिलोम्य	यदि प्रातिलोम्य
७३५	६.२२.८ भा. पं-१४	सजातावोत्तमो दण्डः	सजातावुत्तमो दण्ड
७३५	६.२२.८ भा. पं-१५	नारियाः कर्णादि कर्तनम्	नार्याः कर्णादिकर्तनम्
७३६	६.२३.६ भा. पं-४	सामन	समान
७३६	६.२३.१० भा. पं-३,८,९	हनुमान	हनुमान्
७३७	पं-२,७,७ शीर्ष से	हनुमान	हनुमान्
७३७	पं-४ शीर्ष से	हनुमान "	हनुमान्
७३७	पं-४ शीर्ष से	वानर रूप धरे सुर कोइ	वानर रूप धरे सुर कोइ।"
७३७	६.२३ (ख) भा. पं-२	हुए शोभा पाये,	हुए शोभा पाये।
७३७	६.२३ (ख) भा. पं-३	हम सब सदाचारी,	हम सब सदाचारी।
७३७	६.२३ (च) भा. पं-२	उपाय करता हैं।	उपाय करता है।

पृष्ठाङ्क	संदर्भ	अशुद्ध	शुद्ध
७३८	६.२४.८ भा. पं-१	कहा कि, पवनपुत्र हनुमान	कहा कि पवनपुत्र हनुमान्
७३८	६.२४.८ भा. पं-२,५,८,८, १०,११,१४,१४,१५,१७, १८,२०	हनुमान	हनुमान्
७३८	६.२४.८ भा. पं-१५	तुमने जो अपना दायित्व निभाया ही।	तुमने तो अपना दायित्व निभाया ही।
७३८	६.२४.८ भा. पं-१७	मानस ५-२४-५	(मानस ५-२४-५)
७३९	६.२४ भा. पं-४	कार्त्यवीर्य	कार्तवीर्य
७४०	६.२६.४ भा. पं-४	करते ही भग गया,	करते ही भाग गया,
७४०	६.२६ भा. पं-६	हनुमान	हनुमान्
७४०	६.२६ भा. पं-८	हनुमान	हनुमान्
७४१	६.२७.७ भा. पं-३	ही परिणाम होगा जब श्रीराम	ही परिणाम होगा। जब श्रीराम
७४२	६.२९.९	देहि अब पुरा।	देहि अब पूरा।
७४३	६.३०.८ भा. पं-२	भेजा गया हूँ, कृपालु	भेजा गया हूँ। कृपालु
७४३	६.३१.५ भा. पं-२	(वाममार्गी, पंचमकार सेवी, कामी, कृपण, मोहग्रस्त),	(वाममार्गी, पंचमकार-सेवी), कामी, कृपण, मोहग्रस्त),
७४४	६.३२.२	हरि गुरु निंदा सुनइ जो काना	हरि हर निंदा सुनइ जो काना
७४५	६.३२ भा. पं-१	हनुमान	हनुमान्
७४६	६. ३४ (क).८ भा. पं-२	बीसों जीभ नहीं उखाड़ी	दसों जीभ नहीं उखाड़ी ।
७४९	पं-३,४ शीर्ष से	हनुमान	हनुमान्
७५०	६.३७.८ भा. पं-३	हनुमान	हनुमान्
७५०	६. ३८ (क).७ भा. पं-१	आपसे मैं पूछता हूँ, हे तात!	आपसे मैं पूछता हूँ। हे तात्!
७५१	पं-३ शीर्ष से	ये चारों हृदय में ऐसा जानकर,	ये चारों, हृदय में ऐसा जानकर,
७५१	६.३९.६ भा. पं-२	हनुमान	हनुमान्
७५२	६.४०.४ भा. पं-१	अहार	आहार
७५२	६.४०.६	जिमि टिट्टिभि खग	जिमि टिट्टिभ खग
७५२	६.४०.६ वि. पं-४	क्षुद्राणां तू विशेषतः।	क्षुद्राणां तु विशेषतः।
७५४	६.४१ भा. पं-३	हताहत्	हताहत
७५५	६.४३.२ भा. पं-३	हनुमान	हनुमान्
७५५	६.४३.८ भा. पं-१,२,२,३, ४,४,६,७	हनुमान	हनुमान्
७५५	६.४३ भा. पं-१	हनुमान	हनुमान्
७५६	६.४४.२ भा. पं-१	हनुमान	हनुमान्
७५६	६.४४.४ भा. पं-१	हनुमान	हनुमान्
७५६	६.४४.६ भा. पं-२	हनुमान	हनुमान्
७५६	६.४४.८ भा. पं-१	हनुमान	हनुमान्
७५६	६.४५.२ भा. पं-१,२	हनुमान	हनुमान्
७५७	६.४५.८ भा. पं-१	हनुमान	हनुमान्
७५७	६.४५ भा. पं-२	हनुमान	हनुमान्

पृष्ठाङ्क	संदर्भ	अशुद्ध	शुद्ध
७५७	६.४६.२ भा. पं-१,२,३	हनुमान	हनुमान्
७५७	६.४६.४ भा. पं-१	हनुमान	हनुमान्
७५८	६.४७.२ भा. पं-१	हनुमान	हनुमान्
७५८	६.४७.८ भा. पं-२	हनुमान	हनुमान्
७५९	६.४८.४ भा. पं-३	सबसे कहा, हे मंत्रियों!	सबसे कहा- हे मंत्रियों!
७५९	६.४८ (ख) भा. पं-३	वे राक्षस वन को भस्म	वे राक्षसवन को भस्म
७६१	६.५०.३ भा. पं-२	हनुमान	हनुमान्
७६१	६.५१.३ भा. पं-१	हनुमान	हनुमान्
७६२	पं-१,१ शीर्ष से	हनुमान	हनुमान्
७६२	६.५२.२ भा. पं-३	धुनि बोल रही हैं।	धुन बोल रही हैं।
७६४	६.५५.६ भा. पं-३	हनुमान	हनुमान्
७६५	६.५५.८ भा. पं-२	हनुमान	हनुमान्
७६५	६.५५ भा. पं-३	हनुमान	हनुमान्
७६५	६.५६.२ भा. पं-२	हनुमान	हनुमान्
७६५	६.५६.६ भा. पं-१	अपना कल्याण कर दो	अपना कल्याण कर लो
७६६	पं-१ शीर्ष से	हनुमान	हनुमान्
७६६	६.५७.२ भा. पं-१,२	हनुमान	हनुमान्
७६६	६.५७.४ भा. पं-२	हनुमान	हनुमान्
७६६	६.५७.८ भा. पं-१	हनुमान	हनुमान्
७६६	६.५७ भा. पं-१,१	हनुमान	हनुमान्
७६६	६.५८.२ भा. पं-१,२	हनुमान	हनुमान्
७६७	६.५८.६ भा. पं-१,२,३,४	हनुमान	हनुमान्
७६७	६.५८.८ भा. पं-१,१,२,३	हनुमान	हनुमान्
७६७	६.५८ भा. पं-२	हनुमान	हनुमान्
७६७	६.५९.२ भा. पं-२,२,३	हनुमान	हनुमान्
७६७	६.५९.४ भा. पं-१,२,३	हनुमान	हनुमान्
७६८	पं-२ शीर्ष से	हताहत्	हताहत
७६८	पं-३ शीर्ष से	हनुमान	हनुमान्
७६८	६.५९ भा. पं-२,३,५,६,६	हनुमान	हनुमान्
७६८	६.६०.२ भा. पं-१,२	हनुमान	हनुमान्
७६८	६.६०.४ भा. पं-२	हनुमान	हनुमान्
७६९	पं-१,३ शीर्ष से	हनुमान	हनुमान्
७६९	६.६०.१० भा. पं-२,३	हनुमान	हनुमान्
७६९	६.६० भा. पं-१	हनुमान	हनुमान्
७६९	६.६१.२ भा. पं-२	हनुमान	हनुमान्
७७१	६.६१ भा. पं-२	हनुमान	हनुमान्
७७१	६.६२.४ भा. पं-१,४,८,१०	हनुमान	हनुमान्
७७२	६.६३.४ भा. पं-१	हनुमान	हनुमान्
७७४	पं-१,२,२,४ शीर्ष से	हनुमान	हनुमान्

पृष्ठाङ्क	संदर्भ	अशुद्ध	शुद्ध
७७४	६.६६.५ भा. पं-२	हनुमान	हनुमान्
७७५	६.६७.२	टीडी	टीड़ी
७७५	६.६७.६ भा. पं-२	टिडी	टिड्डी
७८०	६.७२.९ भा. पं-१	हनुमान	हनुमान्
७८१	६.७४.१०	इहाँ देवरिषि	इहाँ देवऋषि
७८२	६.७५ भा. पं-१	हनुमान	हनुमान्
७८३	६.७६.८ भा. पं-२,४	हनुमान	हनुमान्
७८४	६.७६ भा. पं-२	हनुमान	हनुमान्
७८४	६.७७.२ भा. पं-१	हनुमान	हनुमान्
७८७	६.७९ छं० भा. पं-१	दौड़	दौड़े
७८७	६.८०.६ भा. पं-२	सौरज और धैर्य	शौर्य और धैर्य
७८८	६.८० (क) भा. पं-१	जिस के पास	जिसके पास
७८८	६.८० (ख) भा. पं-२	पुंजिभूतस्वरूप	पूंजीभूतस्वरूप
७८८	६.८० (ग) भा. पं-१	और हनुमान जी ने और	और हनुमान् जी ने। और
७८९	६.८२.६ भा. पं-२	हनुमान	हनुमान्
७९१	६.८३ भा.पं-२,२	हनुमान	हनुमान्
७९१	६.८४.२ भा.पं-१,२,३	हनुमान	हनुमान्
७९१	६.८४.४ भा.पं-१,२	हनुमान	हनुमान्
७९२	पं-१,२,३ शीर्ष से	हनुमान	हनुमान्
७९२	६.८५.४ भा.पं-४	हनुमान	हनुमान्
७९५	पं-२ शीर्ष से	लाँगूर (पूँछ)	लाँगूल (पूँछ)
७९५	६.८७ छं० भा.पं-२	दोनों श्रीराम दल और रावण दल उसके	दोनों (श्रीराम दल और रावण दल) उसके
७९५	६.८८.५	बनसी	बंसी
८०१	६.९२.१० भा.पं-२	दसों सिरे काट कर	दसों सिरों को काट कर
८०१	६.९२.१४ भा.पं-२,३	पृथ्वी	आकाश
८०४	पं-१ शीर्ष से	हनुमान	हनुमान्
८०४	६.९५.५ भा.पं-२,३,३,४,५	हनुमान	हनुमान्
८०४	६.९५.६ भा.पं-१	हनुमान	हनुमान्
८०४	६.९५.८ भा.पं-२,३	हनुमान	हनुमान्
८०४	६.९५ छं० भा. पं-१, २, २, ३, ४, ५,६,६,८,८,९,१०	हनुमान	हनुमान्
८०५	६.९६ छं० भा. पं-३	हनुमान	हनुमान्
८०७	६.९८.४ भा. पं-१	हनुमान	हनुमान्
८०७	६.९८.१२ भा. पं-१	हनुमान	हनुमान्
८११	६.१०१ (क).७ भा. पं-१,१	हनुमान	हनुमान्
८११	६.१०१(क).८भा. पं-२,२-३	दसों दिशा में मायारचित् हनुमान	दसों दिशाओं में मायारचित् हनुमान
८११	६.१०१ (क).८ भा. पं-३	लँगूर	लाँगूल

पृष्ठाङ्क	संदर्भ	अशुद्ध	शुद्ध
८११	६.१०१ (क) छं०-१ भा. पं-१,३	हनुमान	हनुमान्
८११	६.१०१ (क) छं०-१ भा. पं-१	लँगूरों	लाँगूलों
८१२	६.१०२.२ भा. पं-२	मर नहीं रहा था भगवान्	मर नहीं रहा था। भगवान्
८१७	६.१०६.४ भा. पं-४	हनुमान	हनुमान्
८१८	६.१०७.२ भा. पं-१	हनुमान	हनुमान्
८१८	६.१०७.४ भा. पं-१,१,२	हनुमान	हनुमान्
८१८	६.१०७.६ भा. पं-१,१,२	हनुमान	हनुमान्
८१८	६.१०७.८ भा. पं-१	हनुामान	हनुमान्
८१८	६.१०७.८ भा. पं-२	हनुमान	हनुमान्
८१८	६.१०७ छं० भा. पं-३,४	हनुमान	हनुमान्
८१९	६.१०७ भा. पं-१	हनुमान	हनुमान्
८१९	६.१०८.२ भा. पं-२	हनुमान	हनुमान्
८१९	६.१०८.४ भा. पं-१,२	हनुमान	हनुमान्
८२१	६.१०९ (ख) भा. पं-२	श्रीराम कि असीम	श्रीराम की असीम
८२२	६.११०.६ भा. पं-५	उपरिआस्त	उदस्त
८२४	पं-४ शीर्ष से	युद्ध में मारा है। जो प्रथम	युद्ध में मारा है, जो प्रथम
८२४	६.१११ छं०-६ भा. पं-२	धूलि से रहित। प्रचण्ड	धूलि से रहित, प्रचण्ड
८२४	६.१११ छं०-७ भा. पं-१	सामन सुन्दर	समान सुन्दर
८२७	पं-३ शीर्ष से	मुनि, सिद्ध, देवता, पक्षी	मुनि, सिद्ध, मानव, पक्षी
८३२	६.११८ (ग) भा. पं-१	हनुमान	हनुमान्
८३३	६.११९ (क).१० भा. पं-२	हनुमान	हनुमान्
८३३	६.११९ (क).१० वि. पं-७	हनुमान	हनुमान्
८३४	६.१२० (क).४	चला बिमान तहँ ते चोखा	चला बिमान तहाँ ते चोखा
८३४	६.१२० (क).६ भा. पं-१	कलियुग को मल के नष्ट करने वाली	कलियुग के मल को नष्ट करने वाली
८३४	६.१२० (ख) वि. पं-४-५	(मानस ५-८-५८)	(मानस ५-५८-८)
८३४	६.१२१ (क).२ भा. पं-१	हनुमान	हनुमान्
८३५	पं-१ शीर्ष से	हनुमान	हनुमान्
८३६	पं-२३ शीर्ष से	विरचित्	विरचित
८३९	७.१.६ भा. पं-१	हनुमान	हनुमान्
८३९	७.१ (क) भा. पं-२	हनुमान	हनुमान्
८३९	७.१ (ख) भा. पं-३	हनुमान	हनुमान्
८३९	७.२.२ भा. पं-१,२,३	हनुमान	हनुमान्
८४०	७.२.५ भा. पं-१,७,७	हनुमान	हनुमान्
८४०	७.२.७ भा. पं-१	हनुमान	हनुमान्
८४०	७.२.९ भा. पं-१,२,४,४	हनुमान	हनुमान्
८४१	पं-१,२ शीर्ष से	हनुमान	हनुमान्

पृष्ठाङ्क	संदर्भ	अशुद्ध	शुद्ध
८४१	पं-२ शीर्ष से	शरीर पुलकित है।	अंग पुलकित हैं।
८४१	७.२.११ भा. पं-१,२	हनुमान	हनुमान्
८४१	७.२ छं० भा. पं-२	हनुमान	हनुमान्
८४१	७.२. (क) भा. पं-१,२,३	हनुमान	हनुमान्
८४१	७.२. (क) के बाद सो.	प्रभु यान चढ़ि।।	प्रभु यान चढ़ि ।।२(ख)।।
८४१	७.२. (ख) सो. भा. पं-१	हनुमान	हनुमान्
८४७	७.८.२ भा. पं-२	हनुमान	हनुमान्
८५१	७.१२.२	द्विजन्ह सिर नाई।।	द्विजन सिर नाई।।
८५१	७.१२ छं०-१ भा. पं-२,५	हनुमान	हनुमान्
८५२	७.१२(ग) भा. पं-२	षड़ंगों के साथ	षडंगों के साथ
८५३	७.१३ छं०-४ भा. पं-२	तर गईं। मुनियों के द्वारा	तर गईं, मुनियों के द्वारा
८५४	७.१४ छं०-१ भा. पं-२	भय से आकुल	भवताप के भय से आकुल
८५४	७.१४ छं०-१ भा. पं-४	शरणागत्	शरणागत
८५५	७.१४ छं०-४ भा. पं-२	भुलकर	भूलकर
८६०	७.१९.१० भा. पं-२,४,५	हनुमान	हनुमान्
८६०	७.१९ (ख) भा. पं-१	हनुमान	हनुमान्
८६४	७.२५.२ भा. पं-२	अत्याधिक रति	अत्यधिक रति
८६४	७.२६.६ भा. पं-१,१,२,३	हनुमान	हनुमान्
८६६	७.२७.५ वि. पं-६	उत्त्प्रेक्षा की है।	उत्प्रेक्षा की है।
८७२	७.३३.४ भा. पं-१	हनुमान	हनुमान्
८७२	७.३३ वि. पं-२	भ (भवमय)	भ (भवभय)
८७४	७.३६.४ भा. पं-४	हनुमान	हनुमान्
८७४	७.३६.६ भा. पं-१	हनुमान	हनुमान्
८७५	पं-१ शीर्ष से	हनुमान	हनुमान्
८७५	७.३७.५ भा. पं-३	हे सभी गुणों की ज्ञान में कुशल	हे सभी गुणों के ज्ञान में कुशल
८७९	पं-२ शीर्ष से	हनुमान	हनुमान्
८८४	७.४९.४ भा. पं-४	सुन्दर फल है कि, आपश्री	सुन्दर फल है कि आपश्री
८८४	७.५०.६ भा. पं-२	हनुमान	हनुमान्
८८५	७.५०.९ भा. पं-१,३	हनुमान	हनुमान्
८८७	७.५३.१ वि. पं-१२	श्रीशीलरूप गोस्वामी पाद	श्रीलरूप गोस्वामी पाद
८८७	७.५३.६ भा. पं-४	चक्रवाती, बवंडर श्रीरामकथारूप	चक्रवाती बवंडर श्रीरामकथारूपी
८८८	७.५४.७ भा. पं-२	कहती हैं कि, हे	कहती हैं कि हे
८८९	७.५४ भा. पं-२	श्रीराम के परमउपासक	श्रीराम के परम उपासक
८९१	७.५७.७ भा. पं-३	जपरूप यज्ञ	जपरूपी यज्ञ
८९२	पं-५ शीर्ष से	तुम्हें भी सुनाया फिर मैं	तुम्हें भी सुनाया, फिर मैं
८९३	७.५९.३	देवरिषि पाहीं।	देवऋषि पाहीं।
८९३	७.५९	अस कहि चले देवरिषि	अस कहि चले देवऋषि
८९७	७.६४	रिषि	ऋषि
८९७	७.६४ भा. पं-३-४	१/१२५/१ से १/१३७/१ तक	१/१२५/१ से १/१३७ तक

पृष्ठाङ्क	संदर्भ	अशुद्ध	शुद्ध
८९७	७.६४ भा. पं-४	१/१३८/१ से १/१४०/१ तक	१/१३८/१ से १/१४० तक
८९८	पं-१ शीर्ष से	२/७० से २/७५ तक	२/७०/१ से २/७५ तक
८९८	७.६५.४ भा. पं-३	२/१०३ से २/१०८ तक	२/१०३/१ से २/१०८ तक
८९९	७.६६(क) भा. पं-३	हनुमान	हनुमान्
८९९	७.६६(ख) भा. पं-२	निवास किया भुशुण्डि जी	निवास किया। भुशुण्डि जी
९००	७.६७(क).४ भा. पं-१,३,४,५	हनुमान	हनुमान्
९००	७.६७(क).६ भा. पं-१,४	हनुमान	हनुमान्
९०१	७.६८(क).२ भा. पं-३	६/७८/१ से ६/८९/९ तक	६/७८/३ से ६/८९/९ तक
९०१	७.६८(क).२ भा. पं-५	६/१०६/१ से ६/१०७ तक	६/१०६/१ से ६/१०६ तक
९०१	७.६८(क).४ भा. पं-३	प्रस्थान किये भुशुण्डि जी	प्रस्थान किये। भुशुण्डि जी
९०४	पं-१ शीर्ष से	चिन्ता रूपिणि सर्पिणीं	चिन्तारूपीणि सर्पिणीं
९०४	७.७२(क).८ भा. पं-६	पापरहित और अजीत	पापरहित और अजित
९०५	७.७३.१	असि रघुपति लीला	अस रघुपति लीला
९०५	७.७३.२ भा. पं-२	जो लोग मलीन	जो लोग मलिन
९०५	७.७३.७ भा. पं-५,६,६	घुमते	घूमते
९०५	७.७३.७ भा. पं-७,७,७	घुम	घूम
९०५	७.७३.७ भा. पं-७	हे पक्षीराज गरुड़ भगवान्	हे पक्षीराज गरुड़! भगवान्
९०७	७.७४ (क).८ भा. पं-५	चिरवा	चिड़वा
९०७	७.७४ (क) भा. पं-१	चिरवाते	चिड़वाते
९०८	७.७६.४ भा. पं-५	प्रकाशमान्	प्रकाशमान
९०८	७.७६.८ भा. पं-२	श्यामल और सुन्दर है।	श्यामल और सुन्दर हैं।
९०८	७.७६.८ भा. पं-३	के सामन शोभा है।	के समान शोभा है।
९०९	७.७७.८ भा. पं-३	अपनी ही प्रतिबिम्ब	अपना ही प्रतिबिम्ब
९१०	७.७७ (क) भा. पं-१	हँसते कि, अब	हँसते कि अब
९१०	७.७७ (क) भा. पं-४	देखकर भाग जाते प्रभु को	देखकर भाग जाते। प्रभु को
९१०	७.७७ (ख) भा. पं-१	मैंने सोचा की चित्त और	मैंने सोचा कि चित्त और
९११	७.७९.३ भा. पं-२	उसे व्याप्ति है	उसे व्यापती है
९१२	७.७९ (क) भा. पं-५	नरो वा परमेश्वारो वा	नरो वा परमेश्वरो वा
९१२	७.८० (क).६ भा. पं-३	विशाल पृथ्वीयाँ थीं।	विशाल पृथ्वियाँ थीं।
९१३	७.८१.४ भा. पं-४	प्रपन्च	प्रपञ्च
९१५	पं-५ शीर्ष से	मानस ७/११३ख.	मानस ७/११३ (क)।
९१५	७.८३ (ख) भा. पं-३	अणीमा, गरिमा,	अणिमा, गरिमा,
९१६	७.८५ (क).५ भा. पं-३	बड़भागी नहीं है, जो जप	बड़भागी नहीं है। जो जप
९१८	७.८७.३ भा. पं-३	कोई धर्मपारायण होता है,	कोई धर्मपरायण होता है,
९१९	७.८८ (क).८ भा. पं-५	ललीत चरित्रों का गान	ललित चरित्रों का गान
९२०	पं-२ शीर्ष से	प्रभु की प्रतीती के बिना	प्रभु की प्रतीति के बिना
९२०	७.८९ (ख) भा. पं-२	पुराण कहते हैं कि, क्या	पुराण कहते हैं कि क्या
९२२	७.९२ (क).८ भा. पं-३	एकममात्र भगवान् श्रीराम	एकमात्र भगवान् श्रीराम

पृष्ठाङ्क	संदर्भ	अशुद्ध	शुद्ध
९२५	७.९५ (ख) भा. पं-३	कहते हैं कि, अपना परम	कहते हैं कि अपना परम
९२७	७.९८ (क).२ भा. पं-१	चारों वर्णों ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र	चारों वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र)
९२७	७.९८ (क).२ भा. पं-१	चारों आश्रमों ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, सन्यास	चारों आश्रमों (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, सन्यास)
९२९	पं-१ शीर्ष से	इतना क्षूद्र होते हैं	इतना क्षुद्र होते हैं
९३२	७.१०३(क).८ भा. पं-१	योग सम्भव है और न ही यज्ञ और	योग सम्भव है, न ही यज्ञ और
९३२	७.१०३(क).८ भा. पं-४	प्रताप है कि, इसमें मन	प्रताप है कि इसमें मन
९३३	७.१०४(क).८ भा. पं-४	माया नहीं व्याप्ति।	माया नहीं व्यापती।
९३६	७.१०७(क)	श्चाप	श्राप
९४३	७.११०(क).१६ भा. पं-१	कहते थे कि, ईश्वर	कहते थे कि ईश्वर
९४३	७.११०(क) भा. पं-१	वह वचन कि, शिव जी	वह वचन कि शिव जी
९४४	७.१११(क).६ वि. पं-२	स्वार्थ अण् प्रयान्त होकर	स्वार्थ में अण् प्रत्ययान्त होकर
९४४	७.१११(क).१० वि. पं-३	अतीसी (अलसी), कुसुम,	अतीसी (अलसी)-कुसुम,
९४६	७.११२(क).१० भा. पं-४	'शास्त्रत: सम्भव है	शास्त्रत: सम्भव है
९४७	७.११३(क).६ भा. पं-२	पश्चात ताप	पश्चात्ताप
९४७	७.११३(क).१० भा. पं-१-२	जिसे शिवजी से प्राप्त किया था	(जिसे शिवजी से प्राप्त किया था)
९४८	७.११३ (ख) भा. पं-२	अविद्या नहीं व्यापृत होगी	अविद्या नहीं व्याप्त होगी
९४८	७.११४ (क).७ भा. पं-३	आकशवाणी	आकाशवाणी
९५१	७.११६ (क).३	सुनहु तम दोऊ	सुनहु तुम दोऊ
९५२	७.११७ (क).११ भा. पं-२	तप, व्रत यम, नियम,	तप, व्रत, यम, नियम,
९५४	७.११८ (क).१२ भा. पं-३	झरोखों अर्थात् खिड़की में	झरोखों अर्थात् खिड़कियों में
९५४	७.११८ (क).१४ भा. पं-२	झंझावात्	झंझावात
९५५	७.११९ (क).१० भा. पं-२	जाठराग्नि	जठराग्नि
९५६	पं-१ शीर्ष से	सवस्थ	स्वस्थ
९५७	७.१२० (क).१९ भा. पं-३	समुद्र का जल साक्षात् नहीं किया जा सकता	समुद्र का जल साक्षात् नहीं पिया जा सकता
९५८	७.१२१(क).१६ भा. पं-१,२,२	दारिद्र	दारिद्र्य
९५९	७.१२१(क).२२	पर निंदा सम अघ न गरिसा	पर निंदा सम अघ न गिरिसा
९५९	७.१२१(क).२७ भा. पं-१	वरिष्ठ पाप नहीं है ।	बड़ा पाप नहीं है ।
९६१	७.१२२(क).८	एहि बिधि भलेहिं सो कुरोग नसाहीं	एहि बिधि भलेहिं सो रोग नसाहीं
९६१	७.१२२(क).८ भा. पं-१	संजीविनी मूली	संजीवनी मूली
९६१	७.१२२(क).८ भा. पं-२	अनुपान का प्रयोग है,	अनुपान का प्रयोग है।
९६१	७.१२२(क).१३ भा. पं-२	मत है कि, भगवान् श्रीराम	मत है कि भगवान् श्रीराम
९६१	७.१२२(क).१९ भा. पं-१	यही कहते हैं कि, रघुपति	यही कहते हैं कि रघुपति
९६२	७.१२३(क).३ भा. पं-२	भुलकर	भूलकर
९६४	७.१२५(क).४ बि पं-२	भक्तिरस	भक्तिरस

पृष्ठाङ्क	संदर्भ	अशुद्ध	शुद्ध
९६४	७.१२५(क) बि पं-२	श्रीमन्नारयण के	श्रीमन्नारायण के
९६६	७.१२८.५ भा. पं-२	चाराचर के स्वामी	चराचर के स्वामी
९६७	७.१२९.२ भा. पं-३	संजीविनी	संजीवनी
९७०	पं-४ शीर्ष से	विरचित्	विरचित
९७०	पं-७ शीर्ष से	सोपाने सप्तमे कृत्ता	सोपाने सप्तमे कृता
९७२	आरती पं-६	आरती	आरती .. .. ..
९७२	आरती पं-८	पर लोक लोक त्राता	परलोक लोक त्राता